दिन और रात की हज़ार सुन्नतें

खालिद अल हुसैनान

दिन और रात की हज़ार सुन्नतें

खालिद अल हुसैनान

विषय सूची

आप यह दर्जा कैसे प्राप्त कर सकते हैं कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान खुद आप से प्यार करने लगे?

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दयालु बहुत माफ करनेवाला, अत्यंत उदार सर्वशक्तिमान, दिलों और आंखों को जैसा चाहे बदलनेवाला, खुली और छिपी को जाननेवला है, मैं सदा और लगातार शाम और सुबह उसकी बड़ाई बोलता हूँ , और मैं गवाही देता हूँ कि सिवाय अल्लाह के और कोई पूजनीय नहीं है, अकेला है कोई उसका साझी नहीं, एक ऐसी गवाही देता हूँ जो अपने कहनेवाले को नर्क की यातना से मुक्त करदे, और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-उसका चुना हुआ पैगंबर है, उनके परिवार पर और उनकी पवित्र पत्नियों और उनके सम्मान, और आदर के लायक़ साथियों पर इश्वर की कृपा और सलाम हो, यह सलाम और दया लगातार उस समय तक होते रहें जब तक रात और दिन बाक़ी हैं.
प्रशंसा और सलाम के बाद.....

जानना चाहिए कि एक मुसलमान के लिए अपने दैनिक जीवन में जो बात अधिक से अधिक ख्याल रखने के योग्य और अत्यंत महत्वपूर्ण है वह यही है कि चलते-फिरते, अपने शब्दों और अपने कर्मों में हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की सुन्नत(या मार्ग) पर चले, और सुबह से लेकर शाम तक अपनी पूरी जीवन को हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-के तरीक़े के अनुसार बनाए.

ज़ुन-नून अल-मिस्री ने कहा: अल्लाह सर्वशक्तिमान से प्यार की निशानी यह है कि अपने प्रिय पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- का अनुसरण करे, उनकी नैतिकता, कार्यों, आदेश और तरीक़ों में. अल्लाह ने कहा:

(قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ) [آل عمران:٣١]

कह दो: “यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह भी तुम से प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा.अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है.(आले-इमरान:३१)

और हसन अल-बसरी ने कहा: दरअसल अल्लाह से प्यार उसके पैगंबर के अनुसरण करने में छिपा है.
एक मोमिन की स्थिति हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-के तारीक़े के अनुसरण करने के हिसाब से नापी जाती है, जितना अधिक उनके तरीक़े पर चलनेवाला होगा उतना ही अधिक अल्लाह के पास ऊँचा और ज़ियादा सम्मानवाला होगा.

यही कारण है कि मैंने इस संक्षिप्त अध्ययन को इकठ्ठा किया है, और इसका लक्ष्य यह है कि मुसलमानों की दैनिक जीवन में हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-के तारीक़े को जीवित किया जाए, इबादत, सोने-जागने, खाने-पीने उठने-बैठने, लोगों के साथ बर्ताव करने, नहाने-धोने, निकलने और प्रवेश करने में और पहनने-ओढ़ने में बल्कि हर हर बात में उनकी सुन्नत को जिंदा किया जाए.
ज़रा सोचीये कि यदि हम में से किसी का कुछ पैसा खो जाए तो हम कितना उसका ख्याल करेंगे और हम कितना दुखी होंगे, और उसको खोजने केलिए हम कितना प्रयास करेंगे बल्कि खोजे बिना हम सांस न लेंगे, हालांकि हमारी जीवन में कितनी सुन्नत हम से छूटती जाती है, लेकिन क्या हम उस केलिए कभी दुखी हुए? क्या हमने उसे अपनी जीवन पर लागू करने का प्रयास किया?

हमारी जीवन की सब से बड़ी मुसीबत जिसको हमें झेलना पड़ रहा है यही है कि हम पैसे और धनदौलत को सुन्नत से भी बढ़कर सम्मान और महत्व देने लगे, यदि लोगों से यह कहा जाए कि जो सुन्नतों में किसी भी एक सुन्नत पर अमल करेगा तो उसे इतना पैसा दिया जाएगा, तो आप देखेंगे कि लोग अपनी जीवन के सारे कार्यों में सुबह से शाम तक सुन्नत को लागू करने के लिए उत्सुक हो जाएंगे, क्योंकि प्रत्येक उन्नत पर कुछ पैसे कमाएंगे. लेकिन क्या यह पैसे उस समय आपको कुछ लाभ दे सकेंगे जब आप क़ब्र में उतारे जाएंगे और आप पर मिटटी डाले जाएंगे?

"بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى "   [الأعلى:١٦-١٧].

“नहीं, बल्कि तुम तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो, हालांकि आखिरत अधिक उत्तम और शेष रहनेवाली है.” [अल-आला:१६-१७].

इस अध्ययन में उल्लेखित सुन्नतों का मतलब ऐसे तरीक़े हैं जिनके करनेवाले को

पुण्य मिलता है, लेकिन छोड़ने वाले को गुनाह नहीं होता है, और जो दिन और रात में बार बार आते रहते हैं, और हम में से प्रत्येक आदमी उस पर अमल कर सकता है.

मुझे इस अध्धयन के द्वारा पता चला कि प्रत्येक आदमी यदि दैनिक सुन्नत पर ध्यान दे तो जीवन के सारे कार्यों से संबंधित कम से कम एक हज़ार सुन्नत को लागू कर सकता है, और इस पुस्तिका का मक़सद यही है कि इन दैनिक हज़ार से अधिक सुन्नतों को लागू करने का आसान से आसान तरीक़ा बयान कर दिया जाए.

यदि एक मुस्लिम इन दैनिक और रात-दिन की हज़ार सुन्नतों को लागू करने का प्रयास करे तो एक महीना में तीस हजार सुन्नत हो जाएगी, इसलिए यदि आदमी इन सुन्नतों को नहीं जानता है, या जानता है लेकिन उसपर अमल नहीं करता है तो फिर सोचिए कि उसने कितने पुण्यों और दर्जों को गंवां दिया, निसंदेह ऐसा आदमी सही मायनों में वंचित है.

सुन्नत पर अम्ल करने के बहुत सारे लाभ हैं: जिन मेंसे कुछ इस तरह हैं:
१ - परमेश्वर के प्रेम का दर्जा पाना यहाँ तक कि परमेश्वर खुद अपने मोमिन भक्त को चाहने लगे.
२ – फ़र्ज़ इबादतों में हुई कमियों का भुगतान.
३ – सुन्नत के खिलाफ कामों से सुरक्षा प्राप्त होना.
४ – सुन्नत पर अमल करना दरअसल अल्लाह की निशानियों का सम्मान करना है.

हे इस्लाम धर्म की जनता! अपने पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की सुन्नतों के विषय में परमेश्वर से डरो! परमेश्वर से डरो! उन्हें अपनी जीवन की वास्तविकता में जिवित करो! तुम नहीं करोगे तो फिर कौन करेगा? यही तो हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- से सच्चे और पक्के प्रेम का प्रमाण है, यही तो हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- के सच्चे अनुसरण की निशानी है.

नींद से जागने की सुन्नतें

१- चेहरे पर से सोने के असर को हाथ से खत्म करना: इमाम नववी और इब्ने-हजर ने इसे पसन्दीदा बात बताया है क्योंकि इस विषय में एक हदीस आई है कि: अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- नींद से उठे और अपने हाथ से अपने चेहरे पर से नींद के चिन्हों को पोछने लगे. इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

२ – यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:

(الحمد الله الذي أحيانا بعدما أماتنا وإليه النشور)

(अल-हमदुल्लाहिल लज़ी अह्याना बादमा अमातना व इलैहिन-नुशूर)

परमेश्वर का शुक्र है, कि उसने हमें मौत देने के बाद फिर से जीवित किया, और उसी की ओर लौटना है. इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है.

३- मिस्वाक या (दातून) : (अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-जब रात में जागते थे तो मिस्वाक से अपने दांत को घंसते थे. इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.

उस के कारण:

१ – इसकी विशेषताओं में यह भी शामिल है कि चुस्ती और फुर्ती पैदा होती है.

२ - और मुंह का गंध खत्म होता है.

बाथरूम में प्रवेश करना और बाहर निकलना

इस से संबंधित भी कई सुन्नतें हैं:

१- प्रवेश होते समय पहले बायें पैर को रखना और निकलते समय पहले दाहिने पैर को बाथरूम से बाहर रखना भी सुन्नत है.
२ – प्रवेश के समय की दुआ यूँ है:

[اللهم إني أعوذ بك من الخبث والخبائث]

(अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल-खुबसे वल-खबाइस)
“हे अल्लाह! मैं स्त्री और पुरुष शैतानों से तेरे शरण में आता हूँ.”

इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.
३ -बाहर नकलने के समय की दुआ:

[غفرانك]

(ग़ुफ़रानक)

(तुझी से माफ़ी चाहता हूँ)
इमाम नसाई को छोड़कर सभी “सुन्न” लिखने वालों ने इसे उल्लेख किया है.
एक व्यक्ति दिन और रात में कई बार बाथरूम में प्रवेश करता है और बाहर निकलता है. और कितनी अच्छी बात है कि प्रवेश करते समय और निकलते समय इन सुन्नतों को लागू करे, दो सुन्नत प्रवेश करते समय और दो सुन्नत निकलते समय.

की सुन्नतें:

१ - बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम(अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यंत दयावान है) पढ़ना.
२ – वुज़ू के शुरू में दोनों हथेलियों को तीन बार धोना.
३- चेहरा धोने से पहले मुंह में पानी लेकर कुल्ली करना और नाक में पानी खींच कर छिनकना.
४ – बायें हाथ से नाक छिनकना, क्योंकि हदीस में है:(तो उन्होंने -मतलब अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- ने- अपनी हथेलियों को तीन बार धोया, उसके बाद कुल्ली की, फिर नाक में पानी चढ़ाया और छिनका, फिर अपने चेहरे को तीन बार धोया.) इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.
५ - मुंह और नाक में पानी डाल कर अच्छी तरह साफ़ करना यदि रोज़ा में न हो. क्योंकि हदीस में है:(और नाक में अच्छी तरह पानी चढ़ाओ यदि तुम रोज़े में न हो) इसे चारों इमामों: नसाई, तिरमिज़ी, अबू-दावूद और इब्ने-माजा ने उल्लेख किया है.
* मुंह में अच्छी तरह पानी लेकर कुल्ली करने का मतलब यह है कि पानी को पूरे मुंह में घुमाए.
* और नाक में अच्छी तरह पानी चढ़ाने का मतलब यह है कि नाक की उपरी भाग तक पानी अच्छी तरह खींच कर चढ़ाएं और खूब साफ़ करें.
६ - एक ही चुल्लू से मुंह और नाक में पानी लें, अलग अलग न करें, जैसा कि हादिस में है:(इसके बाद उन्होंने उसमें (पानी) में हाथ डाला और कुल्ली की और नाक में पानी चढ़ाया एक ही चुल्लू से) इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.
७ – मिस्वाक का प्रयोग करना, और मिस्वाक कुल्ली करते समय करना चाहिए. क्योंकि हदीस में है(यदि मैं अपनी जनता पर कठिन न सझता तो मैं उन्हें प्रत्येक वुज़ू के समय मिस्वाक का आदेश दे देता) इमाम अहमद और नसाई ने इसे उल्लेख किया है.

८ – चेहरा धोते समय दाढ़ी के बालों के बीच में उंगुलियां फिराना, यह उस के लिए है जिसकी दाढ़ी घनी हो. जैसा कि हदीस में है:कि (हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-वुज़ू में दाढ़ी में उंगलियां फिराते थे. इसे इमाम तिरमिज़ी ने उल्लेख किया है.

९ – सिर के मासह(या पोछने) का तारीक़ा:
सिर के मसह का तारीक़ा यह है कि सिर के सामने के भाग से हाथ फैरना शुरू करे और सिर के पीछे गुद्दी की ओर हाथ फैरते हुए लाए और फिर दुबारा सामने की ओर हाथ लाए.
ज़रुरी मसह तो केवल इतना ही है कि पूरे सिर पर जिस तरह भी हो हाथ फैर लिया जाए: जैसा कि हदीस में है कि:(अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने अपने सिर का मसह किया: अपने दोनों हाथों को आगे लाए और फिर पीछे की ओर ले गाए.) इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.

१० – हाथ और पैर की उंगलियों के बीच में उंगलियां फैरना:क्योंकि हदीस में है:कि अच्छी तरह वुज़ू करो, और उंगलियों के बीच में उंगलियां फिराओ) इसे चारों इमामों नसाई, तिरमिज़ी, अबू-दावूद और इब्ने-माजा ने उल्लेख किया है.

११ “तयामुन” मतलब हाथों और पैरों में बायें से पहले दाहिने से शुरू करना: क्योंकि हदीस में है कि (अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-को जूते पहनने...और नहाने-धोने में दाहिने ओर से शुरू करना पसंद था.) इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.
१२ - चेहरा, दोनों हाथ और दोनों पैर के धोने को एक से बढ़ाकर तीन तीन बार करना भी सुन्नत है.
१३ – वुज़ू कर चुकने के बाद गवाही के दोनों शब्दों को पढ़ना:
(أشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له ، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله)
“अशहदु अल्लाइलाहा इल्लाल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहु, वह अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह.” मतलब मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह को छोड़ कर कोई पूजे जाने के योग्य नहीं है, अकेला है उसका कोई साझी नहीं और मुहम्मद अल्लाह के भक्त और उसके पैगम्बर हैं.” इस का फल यह होगा कि उसके लिए स्वर्ग के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, जिस के द्वारा चाहे प्रवेश करे.) इमाम मुस्लिम ने इसे उल्लेख किया है.

१४- घर से वुज़ू करके निकलना: क्योंकि अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:(जो अपने घर में ही साफ़ सुथरा और पाक होकर निकले, और फिर परमेश्वर के भवनों में से किसी भवन(यानी मस्जिद)को जाए ताकि अल्ला के फर्जों में से किसी फ़र्ज़ को अदा करे तो उसके दोनों क़दम ऐसे होंगे कि उनमें से एक तो पाप मिटाएगा, और दूसरा उसका दर्जा बुलंद करेगा.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

१५- रगड़ना: मतलब पानी के साथ साथ या पानी बहाने के बाद अंगों को हाथ से रगड़ना.

१६- पानी को ज़रूरत भर ही खर्च करना: क्योंकि हदीस में है कि : अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- एक मुद (लभभग पौने एक लीटर) पानी से वुज़ू करते थे. इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.

१७ चारों अंगों को धोना: दोनों हाथ और दोनों पैरों को ज़रुरी सीमा से बढ़कर धोना क्योंकि हदीस में है कि (हज़रत अबू-हुरैरा ने वुज़ू किया तो अपने हाथ को धोया और पूरे बाज़ू तक धोया, और पैर को पिंडली तक धोया, उसके बाद उन्होंने कहा: मैंने अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- को इसी तरह वुज़ू करते देखा.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया.

१८- वुज़ू के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ना: क्योंकि अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा: (जो भी इस तरह मेरे वुज़ू करने की तरह वुज़ू करे फिर दो रकअत नमाज़ पढ़े, उन दोनों के बीच में अपने आप से बात न करे (इधरउधर की सोच में न पड़े) तो उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए गए.) इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है, लेकिन इमाम मुस्लिम ने हज़रत उक़बा-बिन-आमिर के बयान को उल्लेख किया जिस में यह शब्द है: " तो उसके लिए स्वर्ग निश्चित होगया.

१९- पूर्ण रूप से वुज़ू करना: इस का मतलब यह है कि प्रत्येक अंग को जैसा धोना है उसतरह सही ढंग से धोए, सारे अंगों को पूरा पूरा और अच्छी तरह धोए, कुछ कमी न रहने दे.

यह बात उल्लेखनीय है कि एक मुस्लिम अपने दिन और रात में कई बार वुज़ू करता है, जबकि उनमें से कुछ लोग पांच बार वुज़ू करते हैं , और उनमें से कुछ तो

पांच बार से भी अधिक वुज़ू करते हैं, खासकर जब एक व्यक्ति ज़ुहा की नमाज़(यानी दिन चढ़ने के समय की नमाज़) या रात की नमाज़ पढ़ता है. इसलिए एक मुस्लमान जब जब भी वुज़ू करे तो इन सुन्नतों पर अमल करे और बार बार इसका ख्याल रखे तो बहुत बड़ा पुण्य प्राप्त कर सकता है.

वुज़ू में इन सुन्नतों पर अमल करने के फल:
इस माध्यम से वह व्यक्ति हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की इस खुशखबरी में शामिल हो जाएगा जिसके शब्द यूँ हैं:" जिसने वुज़ू किया और अच्छी तरह वुज़ू किया तो उसके पाप उसके पूरे शरीर से निकल जाते हैं, यहां तक कि नाखूनों के नीचे से भी (पाप) निकल जाते हैं." इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

मिस्वाक

मिस्वाक करने के बहुत सारे अवसर हैं, और एक मुसलमान दिन और रात में कई बार मिस्वाक का प्रयोग करता है.

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो- ने कहा:(यदि मैं अपनी जनता पर कठिन न समझता तो मैं उन्हें प्रत्येक वुज़ू के समय मिस्वाक का आदेश दे देता) इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया.

रात और दिन में एक मुसलमान के मिस्वाक करने की कुल संख्या बीस बार से कम नहीं होती है. क्योंकि पांच नमाज़ों केलिए तो मिस्वाक करता है इसी तरह निश्चित सुन्नतों के समय, और ज़ुहा की नमाज़ केलिए, और वितर नमाज़ केलिए, और घर में प्रवेश करते समय, क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-जब घर में प्रवेश करते थे तो सब से पहला काम जो शुरू करते थे वह यही था की मिस्वाक करते थे, जैसा कि हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे खुश रहे-ने इसकी खबर दी है. और जैसा कि इमाम मुस्लिम की "सहीह" नामक पुस्तक में उल्लेखित है. इसलिए जब भी आप घर में प्रवेश करते हैं तो मिस्वाक से ही शुरू कीजिए ताकि आपका अमल सुन्नत के अनुसार होजाए. और पवित्र कुरान को पढ़ते समय, और मुंह में गंध उठ जाने के समय, और नींद से उठने के समय, और वुज़ू करते समय भी मिस्वाक का प्रयोग किया करें, क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो- ने कहा कि:(मिस्वाक मुंह को बहुत पवित्र करने वाला और पालनहार को संतुष्ट करने वाला है.) इमाम अहमद ने इसे उल्लेख किया है.

इस सुन्नत पर अमल करने के परिणाम:

क) इस के माध्यम से पालनहार सर्वशक्तिमान की संतुष्टि प्राप्त होती है.

ख) मुँह को पवित्रता मिलती है.

जूते-चप्पलपहनने की सुन्नत

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा:(यदि तुम में से कोई चप्पल पहने तो दाहिनेसे शुरू करे, और जब उतारे तो बायें से शुरू करे, और यदि पहने तो दोनों को पहने या उसे उतार ही दे.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

एक मुस्लिम को दिन और रात में कई बार इस सुन्नत का सामना होता है, क्योंकि मसजिद को जाते समय और निकलते समय, और बाथरूम में प्रवेश करते समय और निकलते समय, और घर से काम को जाते समय, और वहाँ से आते समय, इस सुन्नत की ज़रूरत पड़ती है. इस तरह जूते-चप्पल पहनने की सुन्नत दिन-रात में कई बार आती है, और यदि पहनने-उतारने में सुन्नत का ख्याल रखा जाए और दिल में नियत भी उपस्थित रहे तो बहुत बड़ी भलाई प्राप्त हो सकती है, और एक मुसलमान की आवाजाही उसका उठन-बैठन बल्कि उसके सारे कार्य सुन्नत के अनुसार हो जा सकते हैं.

पोशाक की सुन्नतें

अधिकांश लोगों के साथ जो बातें रात-दिन में बार बार पेश आती रहती हैं उन्हीं में धोने केलिए या सोने आदि केलिए कपड़े को पहनना और उतारना भी शामिल है.

कपड़े को पहनने और उतारने के लिए भी कुछ सुन्नत हैं:

१ -पहनने के समय और उतारने के समय"बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम"(अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यंत दयावान है) पढ़ना चाहिए. इमाम नववी ने कहा है कि यह पढ़ना सभी कामों के समय एक अच्छी बात है.

२- हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- जब कोई पोशाक, या कमीज पहनते थे, या कोई चादर ओढ़ते थे या पगड़ी बांधते थे तो यह दुआ पढ़ते थे:

(اللهم إني أسألك من خيره وخير ما هو له ، وأعوذ بك من شره وشر ما هو له)

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका मिन खैरेही व खैरे मा हुवा लहू, व अऊज़ु बिका मिन शररिही व शररि मा हुवा लहू.

हे अल्लाह!मैं तुझ से मांगता हूँ इसकी भलाई और जो जो भलाई उसके लिए है, और मैं तेरी शरण में आता हूँ उसकी बुराई से और जो जो बुराई उसके लिए है.) इसे अबू -दाऊद, तिरमिज़ी ने उल्लेख किया है, और इसे इमाम अहमद ने भी उल्लेख किया है और इब्ने-हिब्बान ने इसे विश्वसनीय बताया है और हाकिम ने भी इसे सही बताया और कहा कि यह हदीस इमाम मुस्लिम की शर्तों पर उतरती है और इमाम ज़हबी भी उनके इस विचार में उनके सहमत हैं.

३ – पहनने के समय भी दाहिने से शुरू करना. क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की हदीस में है:जब तुम पहनो तो तुम अपने दाहिने से शुरू करो) इसे इमाम तिरमिज़ी, अबू-दाऊद और इब्ने-माजा ने उल्लेख किया है, और यह हदीस विश्वसनीय है.

४ – और जब अपने कपड़े या पाजामे को उतारे तो पहले बायें को उतारे, फिर दाहिने को उतारे.

घर में प्रवेश करने और घर से निकलने की सुन्नत

इस से संबंधित भी कुछ सुनतें हैं.
* इमाम नववी ने कहा है कि “बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम”(अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यंत दयावान है) पढ़ना मुस्तहब्ब यानी पसंदीदा है, और उस समय अल्लाह सर्वशक्तिमान को अधिक से अधिक याद करे और फिर सलाम करे.

१- अल्लाह को याद करे: क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की हदीस में है: (जब आदमी अपने घर में प्रवेश करता है, और प्रवेश करते समय और खाने के समय अल्लाह को याद करता है तो शैतान कहता है चलो चलो न तो तुम्हारे लिए यहाँ कोई रात गुज़ारने की जगह है और न रात का भोजन है.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

२ प्रवेश होने के समय की दुआ पढ़े– क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की हदीस में यह दुआ आई है.

(اللهم إني أسألك خير المولج وخير المخرج ، بسم الله ولجنا ، وبسم الله خرجنا ، وعلى الله ربنا توكلنا ، ثم يسلم على أهله)

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका खैरल-मौलिज व खैरल-मखरिज, बिस्मिल्लाहि वलजना, व बिस्मिल्लाहि खरजना, व अललाहि तवकक्लना. (हे अल्लाह! तुझ से मैं प्रवेश होने की भलाई और निकलने की भलाई मांगता हूँ, हम अल्लाह का नाम लेकर प्रवेश किये, और अल्लाह का नाम लेकर निकले, और अल्लाह हमारे पालनहार पर ही हमने भरोसा किया.) यह दुआ पढ़े और फिर सलाम करे. इसे इमाम अबू-दावूद ने उल्लेख किया है.

यदि घर में प्रवेश करते समय और घर से निकलते समय एक व्यक्ति इश्वर पर भरोसा को महसूस करेगा, तो सदा अल्लाह से संबंध बना रहे गा.
३- मिस्वाक का प्रयोग: हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- जब अपने घर में प्रवेश करते थे तो मिस्वाक से ही शुरू करते थे.
इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

४- सलाम करना: क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कहा है:
(فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً) [النور:٦١]

अलबत्ता जब घरों में जाया करो तो अपने लोगों को सलाम किया करो, अभिवादन अल्लाह की ओर से नियत किया हुआ, बरकतवाला और अत्यधिक पाक. [अन-नूर: ६१]

• और यदि हम मान लें कि एक मुसलमान व्यक्ति प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ को मसजिद में अदा करता है और फिर घर में प्रवेश करता है तो रात-दिन में केवल घर में प्रवेश करने की सुन्नतों की संख्या जिन पर बार बार अमल होता है बीस हो जाती हैं.

• और घर से निकलते समय यह दुआ पढ़े:

(بسم الله ، توكلت على الله ، ولا حول ولا قوة إلا بالله)

!"बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतु अलललाहि वला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह" (अल्लाह के नाम से, मैंने अल्लाह पर ही भरोसा किया, और न कोई शक्ति है और न कोई बल है मगर अल्लाह ही से.) यदि एक व्यक्ति यह दुआ पढ़ लेता है तो उसे(फरिश्तों की ओर से) कहा जाता है, तुम्हारे काम पूरे होगए, और तुम बचा लिए गए, तुम्हें मार्ग दे दिया गया, और शैतान उस से दूर हट जाता है.

इसे तिरमिज़ी और अबू-दाऊद ने उल्लेख किया है.

• ग़ौरतलब है कि एक मुसलमान दिन-रात में कई बार अपने घर से बाहर निकलता है: मस्जिद में नमाज़ के लिए बाहर निकलता है, और अपने काम के लिए घर से बाहर निकलता है, घर के कामों केलिए बाहर निकलता है, यदि एक व्यक्ति जब जब भी अपने घर से निकलता है, और इस सुन्नत पर अमल करता है तो बहुत बड़ा पुण्य और बहुत बड़ी भलाई प्राप्त कर सकता है.

* घर से बाहर निकलते समय की इस सुन्नत पर अमल करने के परिणाम:

१: इस के द्वारा एक आदमी सभी महत्वपूर्ण सांसारिक और आखिरत से संबंधित मामलों में बेफिक्र हो जाता है.

२: इसी तरह आदमी हर प्रकार की बुराई और हानि, चाहे भूतप्रेत की ओर हो या मानवता की ओर से, सब से बच जाता है.

३:यह पढ़ने वाले व्यक्ति को मार्ग मिल जाता है:और रास्ता भटकने से बच जाता है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान आपको आपके सभी धार्मिक और सांसारिक कामों में सही रास्ता दिखाता जाता है.

मसजिद को जाने की सुन्नतें

१ – ज़रा जल्दी मस्जिद में पहुंच जाना भी सुन्नत है, क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- ने कहा:(यदि लोगों को पता चल जाए कि अज़ान देने और (मस्जिद की) पहली लाइन में किया है, और फिर (सिक्का उछाल कर) चुनाव करने के सिवाय वे कोई चारा न पाएं तो वे ज़रूर चुनाव करें. और यदि उनको पता हो जाए कि पहलेपहल नमाज़ केलिए जाने में क्या है तो वे इसके लिए दौड़ा-दौड़ी करें, और यदि उन्हें यह पता चल जाए कि इशा(रात) की और सुबह की नमाज़ में क्या है तो वे उस में ज़रूर आएं भले ही हाथों और घुटनों के बल घिसटते घिसटते आना पड़े.) इमाम बुखारी और मुस्लिम इस हदीस पर सहमत हैं.
* इस हदीस में अरबी भाषा का एक शब्द" तहजीर"
"التهجير"
आया है उसके मायने में इमाम नववी ने कहा है कि उसका मतलब पहलेपहल मसजिद में जाना है.

२ – मस्जिद को जाने की दुआ:
(اللهم اجعل في قلبي نوراً ، وفي لساني نوراً ، واجعل لي في سمعي نوراً، واجعل في بصري نوراً ، واجعل من خلفي نوراً ومن أمامي نوراً ، واجعل من فوقي نوراً ومن تحتي نوراً ، اللهم اعطني نوراً)
(अल्लाहुम्मज-अल फी क़लबी नूरा, व फी लिसानी नूरा, वजअल फी समई नूरा, वजअल फी बसारी नूरा, वजअल मिन खलफी नूरा व मिन अमामी नूरा, वजअल मिन फौक़ी नूरा व मिन तहती नूरा, अल्लाहुम्मा अअतिनी नूरा)
(हे अल्लाह! मेरे दिल में प्रकाश डाल दे, और मेरी जुबान में प्रकाश रख दे, और मेरी कान में प्रकाश डाल दे, और मेरी आंख में प्रकाश रख दे, और मेरे पीछे प्रकाश रख दे, और मेरे आगे प्रकाश रख दे, और मेरे ऊपर से प्रकाश कर दे, और मेरे नीचे से प्रकाश कर दे, हे अल्लाह! तू मुझे प्रकाश दे दे.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

३ – शांति और शालीनता के साथ चलना चाहिए: क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:(जब तुम इक़ामत सुनो तो नमाज़ की ओर चल दो, और तुम शांति और शालीनता को थामे रहो.) इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

• इस हदीस में अरबी भाषा का एक शब्द:"अस-सकीनह"

"السكينة"

आया है उसके मायने हैं आराम से जाना और बेकार बात और धड़पड़-धड़पड़ से दूर रहना.

• इसी तरह इस हदीस में अरबी का एक शब्द:"अल-वक़ार"

"الوقار"

आया है जिसका अर्थ है, शालीनता के साथ आंखों को नीची रखना,और आवाज़ को धीमी रखना और इधरउधर ताक-झांक न करना.

४- विद्वानों ने स्पष्ट कहा है कि मस्जिद को जाते समय सुन्नत यही है कि पैरों को धीरे धीरे और नज़दीक नज़दीक ही उठाकर रखा जाए, और जल्दीबाज़ी से बचा जाए ताकि मस्जिद को जाने वाले के पुण्य की संख्या अधिक से अधिक होसके, यह विचार धर्मिक ग्रंथों के ऐसे सबूतों के आधार पर आधारित है जिन से यह बात स्पष्ट होती है कि मस्जिदों की ओर चलने में पैरों को उठा कर रखने की संख्या जितनी अधिक होगी पुण्य की संख्या भी उसी हिसाब से बढ़ती जाएगी. हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:(क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बताऊँ जिसके माध्यम से अल्लाह पापों को मिटा देता है, और दर्जों को बुलंद कर देता है? तो लोगों ने कहा: क्यों नहीं, हे अल्लाह के पैगंबर! ज़रूर, तो उन्होंने दूसरी बातों के साथ इसे भी उल्लेख करते हुए कहा:" मस्जिदों की ओर अधिक से अधिक क़दम....) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

५ – मस्जिद में प्रवेश करने के समय की दुआ:

(اللهم افتح لي أبواب رحمتك)

"अल्लाहुम्मफ़ तह ली अअबवाबा रहमतिक"

(हे अल्लाह! मेरे लिए तू अपनी दया के दरवाज़ों को खोल दे) इस विषय में एक हदीस है कि :जब आप में से कोई मस्जिद में प्रवेश करे तो हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-पर सलाम भेजे और यह दुआ पढ़े:

(اللهم افتح لي أبواب رحمتك)

"अल्लाहुम्मफ़ तह ली अब्वाबा रहमतिक"

(हे अल्लाह! मेरे लिए तू अपनी दया के दरवाज़ों को खोल दे.)

इसे इमाम नसाई, इब्ने-माजा, इब्ने-खुज़ैमा और इब्ने-हिब्बान ने उल्लेख किया है.

६ – मस्जिद में प्रवेश होते समय दाहिने पैर को पहले बढ़ाना चाहिए: क्योंकि हज़रत अनस इब्ने-मालिक-अल्लाह उनसे खुश रहे- ने कहा है कि: सुन्नत यही है

कि जब आप मसजिद में प्रवेश करते हैं तो अपने दाहिने पैर से शुरू करें और जब निकलने लगें तो अपने बायें पैर से शुरू करें. इसे हाकिम ने उल्लेख किया है और बताया कि यह हदीस इमाम मुस्लिम की शर्तों पर उतरती है और इमाम ज़हबी भी इस में उनके सहमत हैं.

७ – मसजिद में पहली लाइन के लिए आगे रहना चाहिए: क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:(यदि लोगों को पता चल जाए कि अज़ान देने और (मस्जिद की) पहली लाइन में किया है, और फिर (सिक्का उछाल कर) चुनाव करने के सिवाय वे कोई चारा न पाएं, तो वे ज़रूर चुनाव करें. इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

८ – मस्जिद से निकलते समय की दुआ:

(اللهم إني أسألك من فضلك)

(अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका मिन फज़लिका)

“हे अल्लाह! मैं तुझ से तेरी उदारता में से मांगता हूँ.” इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है और इमाम नसाई के पास यह भी ज़ियादा है कि मस्जिद से निकलते समय भी हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-पर सलाम भेजना चाहिए.

९ – मस्जिद से निकलते समय बायें पैर को पहले निकालना चाहिए: जैसा कि अभी अभी उपर हज़रत अनस इब्ने-मालिक-अल्लाह उनसे खुश रहे-की हदीस में गुज़री.

१० – तहिय्यतुल-मस्जिद या मस्जिद में प्रवेश होने की नमाज़ पढ़ना :क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:(यदि आप में से कोई मस्जिद में प्रवेश करे तो बिना दो रकअत नमाज़ पढ़े न बैठे. इमाम बुखारी और मुस्लिम इस हदीस पर सहमत हैं.

* इमाम शाफई ने कहा है कि तहिय्यतुल-मस्जिद कभी भी पढ़ी जा सकती है, बल्कि इसे तो ऐसे समय में भी पढ़ सकते हैं जब आम नमाज़ पढ़ना जाएज़ नहीं है. (जैसे सूर्य उगते और डूबते समय और जब सूर्य बिल्कुल बीच आकाश में हो.)

• और हाफ़िज़ इब्ने-हजर ने कहा है कि: फतवा देने वाले लोग इस बात पर सहमत हैं कि तहिय्यतुल-मस्जिद सुन्नत है.

याद रहे कि केवल उन सुन्नतों की संख्या पचास है, जो पांच नमाज़ों के लिए मस्जिद को जाने से संबंधित है, एक मुसलमान रात-दिन में मस्जिद को जाते समय इन पर अमल करने का प्रयास करता है.

अज़ान की सुन्नतें

अज़ान की सुन्नतें पांच हैं जैसा कि इब्ने-क़य्यिम ने "ज़ादुल-मआद" में उल्लेख किया है:

१ – सुनने वाले को भी वही शब्द दुहराना है जो आज़ान देने वाला आज़ान में कहता है. लेकिन "हय्या अलस-सलाह"(नमाज़ की ओर आओ) और हय्या अलल-फलाह"(सफलता की ओर आओ) में "ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह" (न कोई शक्ति है और न कोई बल है मगर अल्लाह ही से.) पढ़ना चाहिए. इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

* इस सुन्नत के फल: इस का लाभ यह है कि स्वर्ग आपके लिए निश्चित हो जाएगा, जैसा कि इमाम मुस्लिम की "सहीह" नामक पुस्तक में साबित है.

२ –और आज़ान सुनने वाले को यह पढ़ना चाहिए:
(وأنا أشهد ألا إله إلا االله ، وأن محمداً رسول االله ، رضيت باالله رباً ، وبالإسلام ديناً ، وبمحمد رسولاً)
:"व अना अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु, वह अशहदु आन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह, रज़ीतु बिल्लाहि रब्बा, व बिलइस्लामि दीना, व बिमुहम्मादिन रसूला" मतलब मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह को छोड़ कर कोई पूजे जाने के योग्य नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर हैं, मैं संतुष्ट हूँ अल्लाह के पालनहार होने से, और इस्लाम के धर्म होने से और मुहम्मद के दूत होने से.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

* इस सुन्नत पर अमल के फल: इस सुन्नत पर अमल करने से पाप माफ कर दिए जाते हैं. जैसा कि खुद इस हदीस में उल्लेखित है.
३ – अज़ान का जवाब देने के बाद हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-पर सलाम भेजना चाहिए, और सब से अधिक पूर्ण सलाम तो" इबराहीमी दरूद" ही है, इस से अधिक पूर्ण तो और कोई दरूद है नहीं.
• इसका सबूत: हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-का यह फरमान है कि: जब तुम अज़ान देने वाले को सुनो तो वैसा ही कहो जैसा वह कहता है, फिर मुझ पर दरूद भेजो, क्योंकि जो मुझ पर एक बार दरूद पढ़ता है तो उसके बदले में अल्लाह उस पर दस दया उतारता है. इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

* इस सुन्नत पर अमल करने के फल: इसका सब से बड़ा फल तो यही है कि खुद अल्लाह अपने भक्त पर दस दरूद भेजता है.
* अल्लाह के दरूद भेजने का मतलब: अल्लाह के दरूद भेजने का मतलब यह है कि वह फरिश्तों की दुनिया में उसकी चर्चा करता है.

दरूदे इबराहीमी के शब्द यह हैं:
(اللهم صل على محمد وعلى آل محمد كما صليت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم إنك حميد مجيد ، اللهم بارك على محمد وعلى آل محمد كما باركت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم إنك حميد مجيد.)
(अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद, व अला आलि मुहम्मद, कमा सल्लैता अला इबराहीमा व अला आलि इबराहीमा इन्नका हमिदुम-मजीद, अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मद, व अला आलि मुहम्मद, कमा बारकता अला इबराहीमा व अला आलि इबराहीमा इन्नका हमिदुम-मजीद.)
" हे अल्लाह! मुहम्मद और उनके बालबच्चों पर दरूद और दया उतार, जैसे तू ने हज़रत इबराहीम और उनके बालबच्चों पर उतारा, और तू मुहम्मद और उनके बालबच्चों पर बरकत उतार जैसे तू ने हज़रत इबराहीम और उनके बालबच्चों पर बरकत उतारी." इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है.

४ – उनपर दरूद पढ़ लेने के बाद यह दुआ पढ़े:
(اللهم رب هذه الدعوة التامة والصلاة القائمة آت محمداً الوسيلة والفضيلة ، وابعثه مقاماً محموداً الذي وعدته)
अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद- दअवतित-ताम्मति वस-सलातिल-क़ाइमा, आति मुहम्मदन अल-वसीलता वल- फज़ीला, वबअसहू मक़ामम-महमूदन अल-लज़ी .वअदतहू
हे अल्लाह! इस पूर्ण बुलावे और स्थापित नमाज़ के मालिक! हज़रत मुहम्मद को "वसीला" नमक दर्जा और उदारता दे, और उन्हें "मक़ामे-महमूद"(सराहनीय दर्जा) दे.

* इस दुआ का फल: जिसने यह दुआ पढ़ी उसके लिए हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-की सिफारिश निश्चित हो गई.
५ - उसके बाद अपने लिए दुआ करे, और अल्लाह से उसका इनाम मांगे, क्योंकि उस समय दुआ स्वीकार होती है, हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- ने कहा है: अज़ान देने वाले जो कहते हैं वही तुम भी कहो, और जब खत्म कर लो, तो मांगो मिलेगा.

इसे अबू-दाऊद ने उल्लेख किया है, और हफिज़ इब्ने-हजर ने इसे विश्वसनीय बताया, और इब्ने-हिब्बान ने इसे सही कहा है.
* उन सुन्नतों की संख्या कुल पचीस है जो अज़ान सुनने से संबंधित हैं, और जिन पर अज़ान सुनने के समय अमल करना चाहिए.

इक़ामत की सुन्नतें

आज़ान में उल्लेखित पहली चार सुन्नतें इक़ामत में भी उसी तरह की जाएंगीं, जैसा कि “अल-लज्नतुद-दाइमा लील-बुहूस अल-इलमिय्या वल-इफ़्ता के फतवा में आया है, इसतरह इक़ामत की सुन्नतें बीस हो जाएंगी जो हर नमाज़ के समय अमल में आती हैं.

आज़ान और इक़ामत के समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना अच्छा है, ताकि अल्लाह की अनुमति से उसकी आज्ञाकारी हो और उसकी ओर से पूरा पूरा इनाम मिल सके.
क - आज़ान और इक़ामत के समय काअबा की ओर मुंह रखना चाहिए.

ख – खड़ा रहना चाहिए .
ग - आज़ान और इक़ामत दोनों में पवित्र रहना चाहिए, यदि मजबूरी न हो, इक़ामत की शुद्धता के लिए तो पवित्रता ज़रुरी है.
घ - आज़ान और इक़ामत के समय बात न करना विशेष रूप से, उन दोनों के बीच वाले समय में.
ङ – इक़ामत के दौरान स्थिरता बनाए रखना.
च- सम्मानित शब्द “अल्लाह” को साफ़ साफ़ बोलना चाहिए, विशेष रूप से “अल्लाह” के “अ” और “ह” को, और आज़ान में जब जब भी यह शब्द दुहराया जाता है वहाँ इस पर ध्यान देना आवश्यक है, लेकिन इक़ामत में तो ज़रा तेज़ तेज़ और जल्दी जल्दी ही बोलना चाहिए.
छ - आज़ान के दौरान दो उंगलियों को कानों में रखना भी सुन्नत है.

ज- आज़ान में आवाज़ को ऊँची रखनी चाहिए और खिंचना चाहिए लेकिन इक़ामत में एक हद तक कम करना चाहिए.
झ – आज़ान और इक़ामत के बीच थोड़ा समय छोड़ना चाहिए, हदीसों में यह उल्लेखित है कि दोनों के बीच इतना समय होना चाहिए जितने में दो रकअत नमाज़ पढ़ी जा सके या सजदे किये जा सकें, या तस्बीह पढ़ी जा सके, या बैठ सके या बात कर सके, लेकिन मग़रिब की नमाज़ की आज़ान और इक़ामत के बीच केवल सांस लेने भर समय ही काफी है.

लेकिन याद रहे कि उन दोनों के बीच में बात करना मकरूह या न-पसंद है, जैसा कि सुबह की नमाज़ वाली हदीस में उल्लेखित है. और कुछ विद्वानों ने कहा है

कि एक क़दम चलने भर समय भी काफी है, याद रहे कि इस में कोई बुराई नहीं है बल्कि इस में तो जैसा भी हो बात बन जाए गी.

ञ - आज़ान और इक़ामत सुनने वाले के लिए पसंदीदा बात यह है कि आज़ान में जिन शब्दों को सुनता है उन्हें दुहराता जाए, भले ही यह आज़ान कुछ खबर देने के लिए हो, या नमाज़ की आज़ान हो, लेकिन जब इक़ामत में "क़द क़ामतिस-सला" (नमाज़ खड़ी हो चुकी है) को सुनते समय यह कहना चाहिए:"ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह" (न कोई शक्ति है और न कोई बल है मगर अल्लाह ही से.)

सुतरा(या आड़) की ओर नमाज़ पढ़ना

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा: तुम में से जब कोई नमाज़ पढ़े तो किसी आड़ की ओर नमाज़ पढ़े और उस के नज़दीक हो जाए और अपने आड़ और अपने बीच से किसी को भी गुज़रने न दे. इसे अबू-दाऊद, इब्ने-माजा और इब्ने-खुज़ैमा ने उल्लेख किया है.

* यह एक सामान्य हदीस है जिस में नमाज़ के समय "सुतरा" या आड़ रखने के सुन्नत होने का प्रमाण मौजूद है, चाहे मस्जिद में हो या घर में, इसी तरह स्त्री और पुरुष इस में बराबर हैं, लेकिन कुछ नमाज़ियों ने अपने आपको इस सुन्नत से वंचित कर रखा है, इसलिए हम देखते हैं कि वे बिना आड़ रखे नमाज़ पढ़ते हैं.

* यह सुन्नत एक मुसलमान के साथ दिन-रात में कई बार आती है, जैसे निश्चित सुन्नत नमाजों में, और दिन चढ़ने के समय की नमाज़ में, इसी तरह तहिय्यतुल-मस्जिद या मस्जिद में प्रवेश होने की नमाज़ के समय और वितर नमाज़ के समय, जानना चाहिए कि यह सुन्नत महिला के साथ भी लगी हुई है, यदि वह घर में अकेले फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ती है, लेकिन समूह की नमाज़ में इमाम ही अपने पीछे नमाज़ पढ़ने वालों का सुतरा होता है.

सुतरा या आड़ के बारे में कुछ विषय

१ – कोई भी चीज़ जो नमाज़ पढ़ने वाले के सामने काअबा की दिशा में खड़ी हो वह आड़ समझी जा सकती है जैसे दीवार, छड़ी या खम्भा, सुतरा की मोटाई केलिए कोई सीमा नहीं रखी गई है.

२ – लेकिन सुतरा की ऊँचाई ऊंट के ऊपर रखे जाने वाले काठी के कजावे के पिछले भाग के बराबर होनी चाहिए यानी लगभग एक बालिश्त.

३- सुतरा और नमाज़ पढ़ने वाले के बीच की दूरी लगभग तीन गज़ होनी चाहिए या इतनी दूरी होनी चाहिए कि उसके बीच सजदा संभव हो.

४ – सुतरा तो इमाम और अकेले नमाज़ पढ़ने वाले दोनों के लिए है, चाहे फ़र्ज़ नमाज़ हो या नफ्ल.

५ - इमाम का सुतरा ही उनके पीछे नमाज़ पढ़ने वालों के लिए भी आड़ है, इसलिए जरूरत पड़ने पर उनके सामने से गुज़रने की अनुमति है.

सुतरा (या आड़) की सुन्नत पर अमल करने के परिणाम:

क) यदि सामने से नमाज़ को तोड़ने वाली या उसमें गड़बड़ी डालने वाली कोई चीज़ गुज़रे तो सुतरा नमाज़ को टूटने से बचाता है.
ख) सुतरा नज़र को इधरउधर बहकने और ताक-झांक से बचाता है, क्योंकि सुतरा रखने वाला अक्सर अपनी नज़र को अपने सुतरे के भीतर ही रखता है, और इस से उसका विचार नमाज़ से संबंधित बातों में ही घूमता है.

ग) सुतरा सामने से गुज़रने वालों को सामने से गुज़रने का अवसर उपलब्ध करता है, इसलिए बिल्कुल उसके सामने से गुज़रने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रह जाती है.

ऐसी न्फ्ल नमाज़ें जो दिन और रात में पढ़ी जाती हैं

१ – निश्चित सुन्नतें या सुन्नते-मुअक्कदा: हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:जो भी मुसलमान व्यक्ति अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए फ़र्ज़ के सिवाय बारह रकअत न्फ्ल पढ़ता है तो अल्लाह उसके लिए स्वर्ग में एक घर का निर्माण कर देता है,या उसके लिए स्वर्ग में एक घर का निर्माण कर दिया जाता है.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया.

* यह सुन्नतें इस तरह हैं: चार रकअत ज़ुहर से पहले और दो रकअत उसके बाद, और दो रकअत मग़रिब के बाद और दो रकअत इशा के बाद और दो रकअत फ़जर से पहले.
* प्रिय भाई! क्या आपको स्वर्ग में एक घर पाने की इच्छा नहीं है? हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- के इस सलाह का ख्याल रखें, और फ़र्ज़ के इलावा बारह रकअत पढ़ना न भूलें.

ज़ुहा की नमाज़ या दिन चढ़ने के समय की नमाज़ : ज़ुहा की नमाज़ ३६० दान के बराबर है, क्योंकि मानव शरीर में ३६० हड्डी या जोड़ हैं, और प्रत्येक दिन हर हड्डी या हर अंग के जोड़ के बदले में एक दान दान करने की ज़रूरत है, ताकि इस उदारता के लिए धन्यवाद हो सके, लेकिन इन सब की ओर से ज़ुहा की दो रकअत नमाज़ काफी हो जाती है.

इन दोनों रकअत के फल: जैसा कि इमाम मुस्लिम की “सहीह” नामक पुस्तक में उल्लेखित है, हज़रत अबू-ज़र्र से सुनी गई है कि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने बताया कि: (तुम में से किसी भी व्यक्ति पर प्रत्येक अंग के जोड़ की ओर से एक दान करना है, अल्लाह की पवित्रता को बयान करना भी एक दान है, और अच्छी बात का आदेश देना भी एक दान है, और किसी बुराई से रोकना भी एक दान है, और इन सब के लिए जो ज़ुहा की दो रकअत पढ़े ले तो यह काफ़ी है. इस हदीस में एक अरबी शब्द “सुलामा”

आया है उसका अर्थ है: जोड़ यानी मानव शरीर के अंगों का जोड़.
और हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे खुश रहे- के द्वारा उल्लेख की गई कि उन्होंने कहा: मुझे मेरे यार -उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने प्रत्येक महीने में तीन दिन रोज़े रखने का, और ज़ुहा की दो रकअत पढ़ने का आदेश दिया, और यह कि सोने से पहले वितर की नमाज़ पढ़ूं. इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.
इस नमाज़ का समय: इस नमाज़ का समय सूर्य के निकलने के पंद्रहव मिंट के बाद से शुरू होता है और ज़ुहर की नमाज़ का समय आने से पंद्रहव मिंट पहले समाप्त होता है.
इस नमाज़ को पढ़ने का सब से अच्छा समय: सूरज की गर्मी के तेज़ होने के समय इस को पढ़ना अधिक अच्छा है.
इस नमाज़ की रकअतों की संख्या: कम से कम उसकी संख्या दो रकअत है.

उसके अधिकांश की संख्या: अधिक से अधिक उसकी रकअतों की संख्या आठ हैं, लेकिन यह भी कहा गया है कि उसके अधिकांश की कोई सीमा नहीं है.
२- ज़ुहर की सुन्नत: ज़ुहर से पहले पढ़ी जाने वाली निश्चित सुन्नत चार रकअत है, जबकि ज़ुहर के बाद पढ़ी जाने वाली सुन्नत दो रकअत है, जो ज़ुहर के फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ी जाती है.

३ –असर की सुन्नत: हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा: (अल्लाह आदमी पर दया करे जो असर से पहले चार रकअत पढ़े) अबू-दाऊद और तिरमिज़ी ने इसे उल्लेख किया है.
४ – मग़रिब की सुन्नत : हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा: (मग़रिब से पहले नमाज़ पढ़ो, तीसरी बार में उन्होंने कहा: जो पढ़ना चाहे.) इसे बुखारी ने उल्लेख किया.

५ –इशा की सुन्नत: हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा: (प्रत्येक दो आज़ान के बीच एक नमाज़ है, प्रत्येक दो आज़ान के बीच एक नमाज़ है, प्रत्येक दो आज़ान के बीच एक नमाज़ है, और तीसरी बार में कहा: जो पढ़ना चाहे.) इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.
* इमाम नववी ने कहा: दो आज़ान का मतलब आज़ान और इक़ामत है.

तहज्जुद या रात की नमाज़ की सुन्नतें

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:
(रमजान के रोज़े के बाद सबसे अच्छा रोज़ा अल्लाह के सम्मानित महीने "मुहर्रम" के रोज़े हैं, और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सबसे अच्छी नमाज़ रात की नमाज़ (तहज्जुद) की नमाज़ है. इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

१ – तहज्जुद की नमाज़ के लिए सब से अच्छी संख्या ग्यारह या तेरह रकअत है, विशेष रूप से देर देर तक खड़े रह कर. क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- के विषय में एक हदीस में है कि : (हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- ग्यारह रकअत पढ़ा करते थे, यही उनकी नमाज़ थी.) इसे बुखारी ने उल्लेख किया है.
एक और बयान में है कि:(वह रात में तेरह रकअत नमाज़ पढ़ा करते थे.) इसे भी बुखारी ने उल्लेख किया है.
२- और जब रात की नमाज़ के लिए उठे तो मिस्वाक करना सुन्नत है, इसी तरह यह भी सुन्नत है कि सुरह आले-इमरान की इस आयत को :

(إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَلْبَابِ)
(آل عمران: ١٩٠)
निस्संदेह आकाशों और धरती की रचना में और रात और दिन के आगे-पीछे)
(बारी-बारी आने में बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं.) (आले-इमरान: १९० से लेकर सूरा के अंत तक पढ़े.

३ – इसी तरह यह भी सुन्नत है कि जो दुआएं हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-से साबित हैं वे दुआएं पढ़े जिन में यह दुआ भी शामिल है:
(اللهم لك الحمد أنت قيم السموات والأرض ومن فيهن ، ولك الحمد أنت نور السموات والأرض ومن فيهن ، ولك الحمد أنت ملك السموات والأرض ، ولك الحمد أنت الحق ، ووعدك الحق ، ولقاؤك حق ، وقولك حق ، والجنة حق ، والنار حق ، والنبيون حق)
अल्लाहुम्मा लकल हमद, अन्ता क़य्येमुस-समावाति वल-अर्ज़ व मन फि हिन्ना, व लकल हमद अन्ता नुरुस-समावाति वल-अर्ज़ व मन फि हिन्ना, व लकल हमद अन्ता मलिकुस-समावाति वल-अर्ज़, व लकल हमद अन्तल-हक्क़, व वअदुकल-हक्क़, व लिक़ाउका हक्क़, वल-जन्नतु हक्क़, व क़ौलुका हक्क़, वल-जन्नतु-हक्क़, वन-नारू हक्क़, वन-नबिय्यूना हक्क़.

(हे अल्लाह! सारी प्रशंसा तेरे लिए है, तू आकाशों का और पृथ्वी का सिरजनहार और रखवाला है और जो उनमें हैं, सारी प्रशंसा तेरे लिए है, तू प्रकाश है आकाशों का और पृथ्वी का और जो उनमें हैं, और सारी प्रशंसा तेरे लिए है तू आकाशों का और पृथ्वी का मालिक है, और सारी प्रशंसा तेरे लिए है तू हक़ है, और तेरा वचन हक़ है, और तुझ से भेंट हक़ है, और तेरी बात हक़ है, और स्वर्ग हक़ है, और नरक हक़ है, और सब पैगंबर हक़ हैं.)

४ – सुन्नतों में यह भी शामिल है कि रात की नमाजों को पहले दो हलकी-फुल्की रकअतों से शुरू की जाए, यह इसलिए ताकि उन दोनों रकअतों के द्वारा बाद की नमाजों के लिए चुस्त रह सके: हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:(जब तुम में से कोई रात की नमाज़ के लिए खड़ा हो तो दो हलकी-फुल्की रकआतों से शुरू करे.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

५ – इसी तरह यह भी सुन्नत है कि रात की नमाज़ को हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-से साबित दुआ से शुरू करे:जिन में से एक दुआ यह है:

(اللهم رب جبريل وميكائيل وإسرافيل ، فاطر السموات والأرض ، عالم الغيب والشهادة ، أنت تحكم بين عبادك فيما كانوا فيه يختلفون إهدني لما اختلف فيه من الحق بإذنك إنك تهدي من تشاء إلى صراط مستقيم)

(अल्लाहुम्मा रब्बा जिबरीला व मीकाईला व इसराफीला, फातिरस-समावाति वल-अर्ज़, आलिमल-ग़ैबि वश-शहादा, अन्ता तह्कुमु बैना इबादिका फीमा कानू फ़ीहि यख्तलिफून, एहदिनी लिमख-तुलिफा फीहि मिनल-हक्क़ि बिइज़निका इन्नका तह्दी मन तशाउ इला सिरातिम-मुस्ताक़ीम)
(हे अल्लह! जिबरील और मीकाईल और इसराफील का मालिक! आकाशों और पृथ्वी का रचयिता, खुली और ढकी का जानने वाला, तू अपने भक्तों के बीच ऐसी हक्क़ बातों में फैसला करता है जिन में विवाद किया गया, तू मुझे अपनी दया से विवाद वाले हक्क़ में मार्ग दे, निस्संदेह तू जिसे चाहता है, सीधे रास्ते पर लाता है.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

६ - रात की नमाज़ को लंबी करना भी सुन्नत में शामिल है, हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-से प्रश्न किया गया कि कौन सी नमाज़ अधिक

सराहनीय है? तो उन्होंने उत्तर दिया “तूलुल-क़ुनूत” यानी देर तक नमाज़ में ठहरना.) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया. इस हदीस में जो: “तूलुल-क़ुनूत”

“طول القنوت”

है उसका अर्थ है: देर तक नमाज़ में ठहरे रहना.

७ – जब सज़ा से संबंधित क़ुरान की आयत आए तो अल्लाह की पनाह माँगना भी सुन्नत है, उस समय यह पढ़ना चाहिए:

[أعوذ بالله من عذاب الله]

(अऊज़ु बिल्लाहि मिन अज़ाबिल्लाहि)

[मैं अल्लाह की शरण में आता हूँ अल्लाह की सज़ा से).

और जब दया से संबंधित आयत आए तो दया मांगनी चाहिए और यह पढ़ना चाहिए:

[اللهم إني أسألك من فضلك]

(अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका मिन फ़ज़लिका)

[हे अल्लाह! मैं तुझ से तेरी कृपा मांगता हूँ]

और जब अल्लाह की पवित्रता से संबंधित आयत आए तो अल्लाह की पवित्रता व्यक्त करे.

वितर और उसकी सुन्नतें

१-जो व्यक्ति तीन रकअत वितर पढ़े तो उसके लिए सुन्नत यह है कि पहली रकअत में सूरे-फातिहा पढ़ने के बाद सूरह “सब्बिहिसमा रब्बिकल अअला” पढ़े और दूसरी रकअत में” क़ुल या ऐययुहल-काफिरून” पढ़े, और तीसरी रकअत में” क़ुल हु वल्लाहु अहद “ पढ़े. जैसा कि अबू-दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने-माजा और नसाई ने उल्लेख किया है.

२ – जब वितर की तीन रकअत पढ़कर सलाम फेर ले तो तीन बार यह पढ़े:

(سبحان الملك القدوس)

(सुबहानल-मलिकिल-क़ुद्दुस)

(पवित्रता हो अत्यंत पवित्र मालिक के लिए) और तीसरी बार इसे ज़रा ज़ोर से और खींच कर पढ़े और उसके साथ इस शब्द को बढ़ाए:

(رب الملائكة والروح)

(रब्बल-मलाइकते वर-रूह)

हे फरिश्तों और आत्मा का मालिक!. इसे अरनाऊत नामक विद्वान ने विश्वसनीय बताया, अबू-दावूद और नसाई ने इसे उल्लेख किया है.

फज्र की सुन्नत

इसकी कुछ विशेष सुन्नतें हैं :

१ – इसे संक्षिप्त रूप से पढ़ना: क्योंकि हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे खुश रहे- ने कहा: हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- सुबह की नमाज़ की आज़ान और इक़ामत के बीच दो संक्षिप्त रकअतें पढ़ते थे. इमाम बुखारी और मुस्लिम इस पर सहमत हैं.

२ – इन दोनों रकअतों में क्या पढ़ना चाहिए?

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-सुबह की नमाज़ की पहली रकअत में सूरह अल-बक़रा की आयत नंबर १३६ पढ़ते थे, आयत का शुरू इस तरह है:

(البقرة)(قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا١٣٦)

कहो :" हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस बात पर जो हमारी ओर उतारी गई." (अल-बक़रा:१३६)

और एक बयान के अनुसार दूसरी रकअत में सूरह आले-इमरान की आयत नंबर ५२ पढ़ते थे, आयत इस तरह है:

(آل عمران) (آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ :٥٢(

"हम अल्लाह पर ईमान लाए और गवाह रहिए कि हम मुस्लिम हैं"(आले-इमरान:५२)

और उसकी दूसरी रकअत में यह आयत पढ़ते थे:

(آل عمران) (قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ:٦٤))

कहो:"ऐ किताबवाले! आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यंता प्राप्त है."(आले-इमरान:६४) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

* एक अन्य बयान में है कि फजर की दो रकअत में" क़ुल या ऐययुहल-काफिरून" और " क़ुल हु वल्लाहु अहद" पढ़े. इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

३ – लेटना : क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- जब फजर की दो रकअत पढ़ लेते थे तो अपने दाहिने पहलू पर लेटते थे. इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया हैं.

जब आप अपने घर में फजर की दो रकअत पढ़ लेते हैं तो उसके बाद कुछ सेकंड के लिए ही सही लेटये, ताकि सुन्नत पर अमल होजाए.

नमाज़ के बाद बैठना

नमाज़ के बाद बैठना भी सुन्नत है
क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो

नमाज़ की शाब्दिक सुन्नतें

१ – नमाज़ के आरंभ की दुआ- मतलब तकबीरे तहरीमा के बाद की दुआ और वह इस तरह है:

(سبحانك اللهم وبحمدك وتبارك اسمك وتعالى جدك ولا إله غيرك)

(सुबहानकल-लाहुम्मा व बिहमदिका व तबराक्स-मुका व तआला जद्दुका व ला इलाहा ग़ैरुका)

«हे अल्लाह! तुझे पवित्रता हो तेरी प्रशंसा के साथ, तेरा नाम बरकत वाला है और तेरा पद बहुत ऊँचा है, और तुझको छोड़कर और कोई पूजनीय नहीं है.» इसे चारों इमामों: नासाई, तिरमिज़ी, अबू-दावूद और इब्ने-माजा ने उल्लेख किया है.

• इस से संबंधित एक दूसरी दुआ भी है, और वह कुछ इस तरह है:

(اللهم باعد بيني وبين خطاياي كما باعدت بين المشرق والمغرب ، اللهم نقني من خطاياي كما ينقى الثوب الأبيض من الدنس ، اللهم اغسلني من خطاياي بالثلج والماء والبرد)

«अल्लाहुम्मा बाइद बैनी व बैना खतायाय कमा बाअदता बैनल-मशरिक़ वल-मग़रिब, अल्लाहुम्मा नक्क़िनी मिन खातायाय कमा युनक्क़स-सौबुल-अबयज़ु मिनद-दनस, अल्लाहुम्मग़-सिलनी मिन खतायाय बिस-सलजि- वल-माइ वल-बरद»

(हे अल्लाह! मुझे और मेरे पापों के बीच इतनी दूरी करदे जितनी दूरी पूरब और पश्चिम के बीच है, हे अल्लाह! मुझे मेरे पापों से ऐसा सुथरा करदे, जैसे सफेद कपड़ा मैल से साफ़ किया जाता है, हे अल्लाह! मुझे मेरे पापों से धुल दे, बर्फ से और पानी से और ओले से) इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

याद रहे कि नमाज़ के आरंभ की जो दुआएं यहाँ लिखी गई हैं उनमें से किसी को भी चुनकर पढ़ सकते हैं.

२ – पवित्र कुरान को पढ़ने से पहले अल्लाह की शरण मांगते हुए यह पढ़ना चाहिए:

(أعوذ بالله من الشيطان الرجيم)

(अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर-रजीम)
[मैं शैतान शापित से अल्लाह की शरण में आता हूँ]
३ – «बिस्मिल्लाह» पढ़ना भी सुन्नत है: उसके शब्द यह हैं:
(بسم االله الرحمن الرحيم)
«बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम (अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यंत दयावान है).

४ – सूरह फातिहा के बाद «आमीन» (सवीकार करले) कहना.
५ - सूरह फातिहा पढ़ने के बाद एक और कोई सूरह उसके साथ पढ़ना, और यह नियम फजर की दोनों रकअतों में और शुक्रवार की नमाज़ की दोनों रकअतों में, और मग़रिब की पहली दोनों रकअतों में, और चार रकअत वाली किसी भी नमाज़ की पहली दोनों रकअतों में लागू होगा. इसी तरह तन्हा नमाज़ पढ़ने वाला और सारी नफ्ल नमाजों में भी इसी नियम पर चलना चाहिए. लेकिन किसी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला व्यक्ति आहिस्ता वाली नमाज़ में तो सूरह फ़ातिहा पढ़ेगा लेकिन ज़ोर से कुरान पढ़ने की नमाज़ में सूरह फ़ातिहा नहीं पढ़े गा.

६ – और यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:
(ملء السموات وملء الأرض وما بينهما ، وملء ما شئت من شيء بعد أهل الثناء والمجد ، أحق ما قال العبد ،وكلنا لك عبد ، اللهم لا مانع لما أعطيت ولا معطي لما منعت ولا ينفع ذا الجد منك الجد)
(मिलउस-समवाति वल-अर्ज़ि वमा बैनाहुमा, व मिलआ मा शिअता मिन शैए, बअदा अहलिस-सनाइ वल-मजद, अहक्क़ु मा क़ालल-अब्द, व कुल्लुना लका अब्द, अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा अअतैता वला मुअतिया लिमा मनअता वला यनफ़उ ज़ल-जद्दि मिनकल-जद्द.)

«हे अल्लाह!तेरे लिए प्रशंसा है आकाशों भर और पृथ्वी भर, और जो भी उन दोनों के बीच है, और प्रशंसा करने वाले और सम्मान वाले के बाद जिस चीज़ को भी तू चाहे उस चीज़ के बराबर तेरी प्रशंसा हो, भक्त ने जो कहा है उसका तू ही ज़ियादा अधिकार है, और हम सब तेरे भक्त हैं, हे अल्लाह! जो तू दे उसका कोई रोकने वाला नहीं, और जिसको तू रोक दे उसे कोई देने वाला नहीं, तेरे पास सम्मान वाले का सम्मान कुछ काम नहीं देता.» इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

और रुकूअ से उठने के बाद यह पढ़े:

(ربنا ولك الحمد)

«रब्बना व लकल-हमद»
(हे हमारा पालनहार! और तेरे लिए ही सारी प्रशंसा है.)
७ –सजदा और रुकूअ में जो भी «तस्बीह» एक बार से ज़ियादा होगी वह सुन्नत में शामिल है.
८ – और दोनों सजदों के बीच «रब्बिग़-फ़िर ली» (हे मेरा पालनहार! मुझे माफ करदे) यदि एक बार से अधिक पढ़ता है तो वह भी सुन्नत में शामिल होगा.

९- आखिरी तशहहुद के बाद यह दुआ पढ़े:
(اللهم إني أعوذ بك من عذاب جهنم ومن عذاب القبر ومن فتنة المحيا والممات ومن فتنة المسيح الدجال)
(अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिन अज़ाबि जहन्नम व मिन अज़ाबिल –क़बरि व मिन फितनतिल-महया वल-ममात, व मिन फितनतिल-मसीहिद-दज्जाल.)
«हे अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ नर्क की तकलीफ़ से, और क़बर की तकलीफ़ से और जीवन और मृत्यु के परीक्षणों से, और मसीह दज्जाल के परीक्षण से.» इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है.

• और बेहतर यह है कि नमाज़ पढ़ने वाला सजदों में केवल «तस्बीह» पर ही बस न करे बल्कि इसके अलावा जो दुआ करना चाहे करे, क्योंकि हदीस में है:(एक भक्त अपने पालनहार के सब से अधिक उसी समय नज़दीक होता है जब वह सजदे की स्तिथि में होता है, तो उसमें अधिक से अधिक दुआ किया करो) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है.
* इस सिलसिले में और भी बहुत सारी दुआएं हैं, जिसे देखना हो वह «हिस्नुल-मुस्लिम» नामक पुस्तक लेखक क़हतानी को देख सकता है.

*जितने भी शाब्दिक सुन्नतें हैं वे प्रत्येक रकअत में पढ़े जाते हैं सिवाय नमाज़ के शुरू की दुआ, और सिवाय उस दुआ के जो तशह्हुद के बाद पढ़ी जाती है.
* इस तरह केवल शाब्दिक सुन्नतों की संख्या जो फ़र्ज़ नमाज़ में पढ़ी जाती है १३६ सुन्नत हो जाएगी क्योंकि फ़र्ज़ रकअतों की संख्या १७ है और बार बार आने वाली सुन्नतों की संख्या आठ है.

* और शाब्दिक सुन्नतें की संख्या जो न्फ्ल नमाज़ में पढ़ी जाती है १७५ सुन्नत है, क्योंकि न्फ्ल रकअतों की संख्या २७ है जैसा कि हम ने रात-दिन में पढ़ी जाने वाली सुन्नतों के विषय में उल्लेख किया है. याद रहे कि न्फ्ल नमाज़ की रकअतों की संख्या और भी बढ़ सकती है, विशेष रूप से जब रात की नमाज़ और ज़ुहा की नमाज़ की रकअतों को बढ़ाया जाए, उसी के अनुसार इस सुन्नत के अमल में भी बढ़ावा होगा.

और ऐसी शाब्दिक सुन्नतें जो नमाज़ में केवल एक बार पढ़ी जाती हैं दोहराई नहीं जाती हैं इस तरह हैं:
१- नमाज़ शुरू करने की दुआ.
२ – और तशह्हुद के बाद की दुआ.
इस तरह फ़र्ज़ नमाज़ में इस सुन्नत की संख्या कुल दस होगी.

* और दिन-रात में पढ़ी जाने वाली सुन्नत नमाजों में इस सुन्नत की संख्या २४ होगी, उल्लेखनीय है कि इस की संख्या और भी बढ़ सकती है, यदि रात की नमाज़ और ज़ुहा की नमाज़ और तहिय्यतुल-मस्जिद या मस्जिद में प्रवेश होने की नमाज़ को भी बढ़ाया जाए, तो उसी के हिसाब से इस सुन्नत के अमल में भी बढ़ावा होगा भले ही यह सुन्नत एक नमाज़ में एक बार से अधिक नहीं पढ़ी जाती, और इस तरह पुण्य भी बढ़ेगा और सुन्नत पर अमल भी आगे बढ़ेगा.

नमाज़ की अमली सुन्नतें

१- इहराम की तकबीर(यानी नमाज़ शुरू करने) के साथसाथ दोनों हाथों को उठाना।
२ – रुकूअ के लिए झुकते समय भी दोनों हाथों को उठाना।
३ - रुकूअ से उठते समय भी दोनों हाथों को उठाना।
४ - तीसरी रकअत के लिए उठते समय दोनों हाथों को उठाना, और यह उसी नमाज़ में होगा जिस में दो तश्शहुद होते हैं।
५ - हाथ उठाते समय और छोड़ते समय उंगलियों को एक दूसरे के साथ मिलाए रखना।
६ - उँगलियों को खुले खुले रखना और हथेली को क़िबला(पवित्र कअबा) की और रखना।
७ - उँगलियोंको उठाते समय दोनों कंधे के बराबर या दोनों कानों की लोलकियों के बराबर रखना।
८ – दाहिने हाथ को बाएं हाथ पर रखना, अथवा दाहिने हाथ से बाएं हाथ की कलाई की हड्डी को पकड़ना।
९ – नज़र को सजदा की जगह पर रखना।
१० – दोनों पैरों को थोड़ा अलग अलग रखना।
११ – पवित्र कुरान को ठहर ठहर कर आराम से उसके अर्थ में सोच-विचार करते हुए पढ़ना।

रुकूअ में की जाने वाली सुन्नतें

१ – रुकूअ में अपने दिनों हाथों से दोनों घुटनों को पकड़ना और उंगलियों को फैलाए हुए रखना।

२ -रुकूअ में अपनी पीठ को लंबी और बराबर रखना।
३ – नमाज़ी को अपना सिर अपनी पीठ के बराबर रखना चाहिए न उससे ऊपर रखे और न उससे नीचे रखे।
४ – और अपने बाजूओं को अपनी पहलूओं से दूर दूर रखना।

सजदों में की जाने वाली सुन्नतें

१ - और अपने बाजूओं को अपनी पहलूओं से दूर रखना सुन्नत है।
२ - अपने दोनों जांघों को अपने पेट से दूर रखना भी सुन्नत है।
३ –और अपने जांघों को अपनी पिंडलियों से दूर रखना भी सुन्नत में शामिल है।
४ –और सजदे में अपने घुटनों के बीच दूरी रखना भी एक सुन्नत है।
५ –अपने दोनों पैरों को खड़े रखना भी सुन्नतों में शामिल है।
६ - और अपनी उंगलियों के पेटों को ज़मीन से लगाए रखना भी सज्दे की सुन्नत है।
७ –इसी तरह सज्दों के दौरान दोनों पैरों को जमाए रखना भी एक सुन्नत है ।
८ - और अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कंधों अथवा कानों के बराबर में रखना सुन्नत में शामिल है।
९ –दोनों हाथों को खुला खुला रखना भी सुन्नत है।
१० –इसी तरह उंगलियों को एक दूसरे के साथ मिले रखना भी सुन्नत है।
११ –इसी तरह उंगलियों को क़िबला की ओर रखना सुन्नत है।
१२ –दोनों सज्दों के बीच बैठना भी सुन्नत है, और उसके दो तारीक़े हैं :

क) «इक़आअ» मतलब दोनों पैरों को खड़े रख कर दोनों तलवों के सहारे पर बैठना।

ख) –»इफ्तिराश» अर्थात: दाहिने पैर को खड़ा रखना और बाएं पैर को बिछा देना, पहले तशह्हुद में बाएं पैर को मोड़ कर उसपर बैठना और दाहिने पैर को खड़ा रखना, और दूसरे तशह्हुद में पैरों को रखने के तीन तारीक़े हैं:

क) दाहिने पैर को खड़ा रखे और बाएं पैर को दाहिने पैर की पिंडली के नीचे रखे और पिछवाड़े को ज़मीन से लगा कर बैठे।

ख) –यह बैठक भी पहले की तरह ही है केवल अंतर यह है कि दाहिने पैर को खड़ा नहीं रखेगा, बल्कि उसे भी बाएं पैर की तरह ही रखेगा।

ग) –दाहीने को खड़ा रखेगा और बाएं को दाहिनी पिंडली और रान के बीच में रखेगा।

१३- दोनों हाथों को दोनों रानों पर रखेगा, दाहिने को दाहिने पर और बाएं को बाएं पर, और उंगलियों को सीधी रखेगा लेकिन एक दूसरे से मिली हुई रखेगा।

१४ – अंगूठे से पहले वाली ऊँगली को तशह्हुद में शुरू से आखिर तक हिलाता रहेगा ।१५ –दोनों सलाम फेरते समय दाहिने और बाएं ओर मुंह फेरेगा।
१६ –»जिल्सतुल-इस्तिराहा» अथवा आराम की बैठक: यह बिलकुल संक्षिप्त बैठक होती है जिस में कुछ नहीं पढ़ा जाता है, और उसकी जगह पहली और दूसरी रकअत में दूसरे सज्दे के बाद है।

• याद रहे कि कुल २५ अमली सुन्नतें ऐसी हैं जो प्रत्येक रकअतमें दोहराई जाती हैं, तो कुल फ़र्ज़ नमाज़ में इस सुन्नत की संख्या ४२५ हो जाएगी।

• और न्फ्ल नमाज़ो में जिनकी संख्या २५ रकअत है -जैसा कि हम रात और दिन में पढ़ी जाने वाली सुन्नतों के खण्ड में उल्लेख कर चुके हैं- तो इस सुन्नत की संख्या ६२५ होजाएगी, यह उस समय होगा यदि एक व्यक्ति प्रत्येक रकअत में इसअमली सुन्नत पर अमल करेगा।

• और यदि एक मुसलमान व्यक्ति ज़ुहा की नमाज़ और रात की न्फ्ल नमाज़ की रकअतों को भी शामिल कर लेता है तो फिर उसी के अनुसार इस सुन्नत पर अमल भी बढ़ेगा।

• और अमली सुन्नतें ऐसी हैं जो नमाज़ में केवल एक बार या दोबार दुहराई जाती हैं।

१ - इहराम की तकबीर (अथवा नमाज़ शुरू करने) के साथसाथ दोनों हाथों को उठाना भी अमली सुन्नत में शामिल है।
२- तीसरी रकअत के लिए उठते समय दोनों हाथों को उठाना भी सुन्नत है , और यह उसी नमाज़ में होगा जिस में दो तशह्हुद होते हैं।
३- अंगूठे से पहले वाली ऊँगली को तशह्हुद में शुरू से आखिर तक हिलाते रहना भी सुन्नत है और यह दोनों तशह्हुद की बैठक में होगा।
४ - दोनों सलाम फेरते समय दाहिने और बाएं ओर मुंह फेरना।
५ - «जिल्सतुल-इसतिराहा» अथवा आराम की बैठक: और यह चार रकअत

वाली नमाज़ में दो बार दोहराई जाती है, और बाक़ी नमाजों में एक बार आती है, चाहे फ़र्ज़ हो या न्फ्ल।

६ –»तवर्रुक»: (यानी दाहिने पैर को खड़ा रखना और उसे बाएं पैर की पिंडली के नीचे रखना और पिछवाड़े को ज़मीन से लगा कर बैठना भी सुन्नत है, याद रहे कि यह उस नमाज़ के दूसरे तशह्हुद में की जाती है जिस नमाज़ में दो तशह्हुद होते हैं।

• इन सुन्नतों को आप नमाज़ में केवल एक बार करेंगे, लेकिन तशह्हुद में ऊँगली का इशारा फज्र को छोड़कर सारी फ़र्ज़ नमाजों में दो बार आता है, और «जिल्सतुल-इसतिराहा» अथवा आराम की बैठक चार रकअत वाली नमाज़ में दो बार आती है।इसतरह इसकी कुल संख्या ३४ हो जाती है।

• और यह अमली सुन्नत –उन में से दो पहली और आखरी को छोड़कर- प्रत्येक नमाज़ में दुहराई जाती है, तो फिर कुल संख्या ४८ हो जाएगी।

• इसलिए मेरे शुभ भाई! ध्यान में रखिए, और अपनी नमाज़ को इन शाब्दिक और अमली सुन्नतों के द्वारा सजाना मत भूलिएगा।ताकि अल्लाह सर्वशक्तिमान के पास आपका इनाम बढ़े और आपकी स्तिथि ऊँची हो।

नमाज़ के बाद की सुन्नतें

- तीन बार अल्लाह से क्षमा मांगना, और यह दुआ पढ़ना:
«اللهم أنت السلام ومنك السلام تباركت يا ذا الجلال والإكـرام»

«अल्लाहुम्मा अन्तस्-सलामु वा मिन्कस्-सलामु, तबारक्ता या ज़ल-जलालि वल-इकराम»

(हे अल्लाह तू ही शांति है और तुझ ही से शांति है, तू बरकत वाला है हे महिमा और सम्मान वाला I) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है I

२- और यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है :
(لا إله إلا االله وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير، اللهم لا مانع لما أعطيت ولا معطي لما منعت ولا ينفع ذا الجد منك الجد)

«ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल-मुल्कु व लहुल-हमदु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा अअतैता वला मुअतिया लिमा मनअता वला यनफ़उ ज़ल-जद्दि मिन्कल-जद्द I» (अल्लाहको छोड़ कर कोईपूजे जाने के योग्य नहींहै, अकेला है उसका कोई साझी नहीं हे, उसी का राज है और उसी केलिए सारी प्रशंसा है और वही सब चीज़ पर शक्तिशाली है, हे अल्लाह! जो तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जिसको तू रोक दे उसे कोई देने वाला नहीं, तेरे पास सम्मान वाले का सम्मान कुछ काम नहीं देता I) इसे इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है I

३- और यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत में शामिल है:

(لا إله إلا االله وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير ، لا حول ولا قوة إلا باالله ، لا إله إلا االله ولا نعبد إلا إياه له النعمة وله الفضل وله الثناء الحسن ، ولا إله إلا االله مخلصين له الدين ولو كره الكافرون)

«ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल-मुल्कु व लहुल-हमदु व

हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर,ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहला इलाहा इल्लल्लाहु वला नअबुदु इल्ला इय्याहु लहुन्-निअमतु व लहुल-फज़लु व लहुस्-सनाउल-हसन्, व ला इलाहा इल्लल्लाहु मुखलिसीना लहुद-दीना व लौ करिहल-काफिरून»

(अल्लाहको छोड़ कर कोईपूजे जाने के योग्य नहींहै, अकेला है उसका कोई साझी नहीं हे, उसी का राज है और उसी केलिए सारी प्रशंसा है और वही सब चीज़ पर शक्तिशाली है,और न कोई शक्ति है और न कोई बल है मगर अल्लाह ही से, अल्लाहको छोड़ कर कोईपूजे जाने के योग्य नहींहैऔर हम उसे छोड़ कर किसी और की पूजा नहीं करते हैं, उसी केलिए उदारता है और उसी के लिए बड़ाई है और उसी केलिए अच्छी प्रशंसा है,अल्लाहको छोड़ कर कोईपूजनीय नहींहै, हम साफ़दिली से उसी की फर्माबरदारी करते हैं यद्यपि काफ़िरों को बुरा लगे) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।
४ इसी तरह तेंतीस (३३) बार यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:

«سبحان االله ، والحمد الله ، واالله أكبر»

«सुब्हानल्लाह, वल-हम्दुलिल्लाह, वल्लाहु अक्बर»
(ख़ूब पवित्रता है अल्लाह के लिए, और प्रशंसा है अल्लाह के लिए, और अल्लाह बहुत बड़ा है।)

साथ ही यह दुआ पढ़े:
«لا إله إلا االله وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير»

«ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर।»

(अल्लाहको छोड़ कर कोईपूजे जाने के योग्य नहींहै, अकेला है उसका कोई साझी नहीं हे, उसी का राज है और उसी केलिए सारी प्रशंसा है और वही सब चीज़ पर शक्तिशाली है।) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

५ –इसी प्रकार यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:

«اللهم أعني على ذكرك، وشكرك، وحسن عبادتك»

«अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुस्नि इबादतिक्»

(हे अल्लाह!मेरीमदद कर तुझे याद करने पर, और तेरे धन्यवाद पर, और अच्छी तरह से तेरी पूजा करने पर ।) इसे अबू-दाऊद और नसाई ने उल्लेख किया है।
६ – नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत में शामिल है:

«اللهم إني أعوذ بك من الجبن ، وأعوذ بك أن أرد إلى أرذل العمر ، وأعوذ بك من فتنة الدنيا وأعوذ بك من عذاب القبر»

«अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल-जुब्नि, व अऊज़ु बिका मिन् अन् उरद्दा इला अरज़ालिल-उमरि, व अऊज़ु बिका मिन फितनतिद-दुन्या, व अऊज़ु बिका मिन अज़ाबिल-क़ब्र» (हे अल्लाह!मैं तेरी शरण मे आता हूँ कायरता से, और मैं तेरी शरण मे आता हूँ अपमानजनक बुढ़ापे में डाले जाने से, और मैं तेरी शरण मे आता हूँ दुनिया के परीक्षण से, और मैं तेरी शरण मे आता हूँ क़ब्र की पीड़ा से ।) इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है।

७- इसी तरह सुन्नत दुआओं में यह दुआ भी शामिल है:
«رب قني عذابك يوم تبعث عبادك»

«रब्बि क़िनी अज़ाबका यौमा तब्असु इबादक्»

(हे मेरे पालनहार! तू मुझे उस दिन अपनी पीड़ा से बचा जब तू अपने दासों को उठाएगा) क्योंकि हज़रत बरा के द्वारा उल्लेखित है कि उन्होंने कहा:जब हम अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-के पीछे नमाज़ पढ़ते थे, तो हमारी इच्छा यही होती थी कि हम उनकी दहिनी तरफ रहें, तो वह हमारी तरफ चेहरा करते थे, तो मैंने उन्हें यह पढ़ते सुना:
«رب قني عذابك يوم تبعث - تجمع- عبادك»
«रब्बि क़िनी अज़ाबका यौमा तब्असु-तज्मउ-इबादक्»

(हे मेरे पालनहार! तू मुझे उस दिन अपनी पीड़ा से बचा जब तू अपने बन्दों को उठाएगा यानी जमा करेगा) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

८ –इन्ही सुन्नतों में सूरह « क़ुल हुवल्लाहु अहद» पढ़ना भी शामिल है , इसी तरह क़ुल अऊज़ु बि-रब्बिल- फलक़ « पढ़ना, और « क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन-नास» पढ़ना भी सुन्नत है ।इसे अबू- दाऊद , तिरमिज़ीऔर नसाई ने उल्लेख किया है।

• फजर और मग़रिब की नमाज़ के बाद इन सूरों को तीन तीन बार दोहराना चाहिए।

९ –»आयतल-कुर्सी» यानी अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल- हय्युल-क़य्यूम, पढ़ना चाहिए ।इसे इमाम नसाई ने उल्लेख किया है।

१० - और फजर और मग़रिब की नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:

«لا إله إلا االله وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد يحي ويميت وهو على كل شيء قدير »

«ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु युहयी व युमीत व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर।»

(अल्लाहको छोड़ कर कोईपूजे जाने के योग्य नहींहै, अकेला है उसका कोई साझी नहीं हे, उसी का राज है और उसी केलिए सारी प्रशंसा है, वही ज़िंदा करता है और मौत देता है, और वही सब चीज़ पर शक्तिशाली है।)इसे इमाम तिरमिज़ी ने उल्लेख किया है।

११ –याद रहे कि ज़िक्र और तस्बीह को हाथ पर गिनना भी सुन्नत है, और एक रिवायत में तो है कि दाहिने हाथ पर गिनना चाहिए लेकिन उसमे विवाद है, भले ही दूसरे आम सबूतों से इसी कीपुष्टि होती है।

१२ –इन दुआओं को उसी स्थान पर रह कर पढ़े जहाँ नमाज़ पढ़ी हो, बिना जगह को बदले।

• इन सुन्नतों की कुल संख्या लगभग ५५ होती है , जिनको एक मुस्लमान व्यक्ति प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ के बाद अदा करने का प्रयास करता है, इस की संख्या फजर और मग़रिब की नमाज़ में बढ़ भी सकती है।

प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ के बाद इस सुन्नत पर अमल करने और उसकी पाबंदी करने के परिणाम:

क) यदि एक मुसलमान व्यक्ति रात-दिन की नमाजों के बाद इन आराधनाओं और विनतियों को पाबंदी से पढ़ेगा तो उसके लिए ५०० दान का पुण्य लिखा जाएगा।क्योंकि अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-का फ़रमान है: « प्रत्येक सुब्हानल्लाह» पवित्रता है अल्लाह के लिए एक दान है, और प्रत्येक «अल्लाहु अक्बर»(अल्लाह बहुत बड़ा है) एक दान है, और प्रत्येक «अलहम्दुलिल्लाह» (सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है) एक दान है, और प्रत्येक «ला इलाहा इल्लाहू» (अल्लाह को छोड़ कर कोई पूजनीय नहीं है) एक दान है» ।इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

•इमाम नववी ने कहा: दान होने का मतलब यह है कि दान देने के जैसा पुण्य प्राप्त होगा।
ख) यदि एक मुसलमान व्यक्ति रात-दिन की नमाजों के बाद इन आराधनाओं और विनतियों को पढ़ने का प्रयास करेगा तो उसके लिए स्वर्ग में ५०० पेड़ लगा दिए जाएंगे, क्योंकि अल्लाह के पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-एक बार हज़रत अबू-हुरैरा के पास से गुज़रे जब वहएक पौधा लगा रहे थे तोउन्होंने कहा: (हे अबू-हुरैरा! क्या मैं तुम्हें इस पौधे से बेहतर पौधे के विषय में न बताऊँ? तो उन्होंने कहा: क्यों नहीं हे अल्लाह के पैगंबर! इस पर उन्होंने कहा: यह पढ़ा करो:

«سبحان االله والحمد الله ولا إله إلا االله واالله أكبر»

«सुब्हानाल्लाहि वल-हम्दुलिल्लाहि, वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर» (पवित्रता है अल्लाह के लिए, और सारी प्रशंसा है अल्लाह ही के लिए, अल्लाह को छोड़कर कोई पूजनीय नहीं है, और अल्लाह बहुत बड़ा है।) यदि यह पढ़ोगे तो प्रत्येक के बदले में तुम्हारे लिए स्वर्ग में एक पेड़ लगा दिया जाएगा।इसे इब्ने-माजा ने उल्लेख किया है, और अल्बानी ने इसे सहीह और विश्वसनीय बताया है।

ग) यदि एक व्यक्ति इसे पढ़ता है तो उसके और स्वर्ग के बीच मौत के सिवाय और कोई रुकावट नहीं रहता है बस मरते ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाएगा, यह उसके लिए है जो प्रत्येक नमाज़ के बाद , आयतल-कुर्सी पढ़ता है और उसका ख्याल रखता है।

घ) जो इन दुआओं को लगातार पढ़ता है तो उसके पापों को मिटा दिया जाता है भले ही वे समुद्र के झाग की तरह हों।जैसा कि इमाम मुस्लिम की «सहीह» नामक पुस्तक में उल्लेखित है।

ङ) जो भी प्रत्येक नमाज़ के बाद , इन दुआओं को पढ़ता है और उसका ख्याल रखता है तो वह न दुनिया में और न ही आखिरत में अपमान अथवा नाकामी का कभी मुंह देखेगा, क्योंकि शुभ हदीस में है: वे उसके लिए सुरक्षा करने वाले बन जाते हैं, और उनका पढ़ने वाला कभी विफल नहीं होता है।इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

च) इस के द्वारा फ़र्ज़ में हुई कमी-बैशी का भुगतान हो जाता है।

सुबह में पढ़ी जाने वाली सुन्नतें

१ -सुबह में»आयतल-कुर्सी» यानी (अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल-हय्युल-क़य्यूम) पढ़ना सुन्नत है।
उसका फल वही है जो शुभ हदीस में उल्लेखित है:» जिसने सुबह होते समय इसे पढ़ा तो वह शाम होने तक के लिए भूत-प्रेत से मुक्त रहेगा, और जिसने शाम होते समय इसे पढ़ा तो वह सुबह होने तक के लिए भूत-प्रेत से मुक्त रहेगा।» इसे नसाई ने उल्लेख किया है, और अल्बानी ने इसे विश्वसनीय बताया है।
२ –»अल-मुअव्वज़ात» पढ़ना यानी : सूरह» क़ुल हुवल्लाहु अहद» और क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल- फलक़ « और « क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन-नास» पढ़ना।» इसे अबू- दाऊद और तिरमिज़ी ने उल्लेख किया है।

इसका फल यह है कि जो इन्हें तीन बार सुबह होते और शाम होते पढ़ेगा तो यह उसके लिए सब चीज़ के लिए काफी है।जैसा कि इसी शुभ हदीस में आया है।
३ – और यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:

« أصبحنا وأصبح الملك الله والحمد الله ، لا إله إلا االله وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير رب أسألك خير ما في هذا اليوم وخير ما بعده ، وأعوذ بك من شر ما في هذا اليوم وشر ما بعده ، رب أعوذ بك من الكسل وسوء الكبر ، رب أعوذ بك من عذاب النار وعذاب القبر»

« अस्बह्ना व अस्बहल-मुल्कु लिल्लाहि वल हम्दुलिल्ला, ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल-मुल्कु व लहुल-हमदु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, रब्बि अस्अलुका खैरा माफ़ी हाज़ल-यौम व खैरा मा बअदहु, व अऊज़ु बिका मिन शर्रि मा फी हाज़ल-यौम, व शर्रि मा बअदहु, रब्बि अऊज़ु बिका मिनल-कसल, व सूइल-किबर, रब्बि अऊज़ु बिका मिन अज़ाबिन-नारि व अज़ाबिल-क़ब्र»

(हम सुबह किए और राज और प्रशंसा ने अल्लह के लिए सुबह किया, अल्लाहको छोड़ कर कोईपूजे जाने के योग्य नहींहै, अकेला है उसका कोई साझी नहीं हे, उसी का राज है और उसी केलिए सारी प्रशंसा है और वही सब चीज़ पर शक्तिशाली है, हे मेरे पालनहार! मैं तुझ से मांगता हूँ जो इस दिन में भलाई है , और जो उसके बाद भलाई है, और मैं तेरी शरण में आता हूँ उस बुराई से

जो इस दिन में है जो बुराई उसके बाद है।हे मेरे पालनहार! मैं सुस्ती और बुढापे की कठनाई से तेरी शरण में आता हूँ हे मेरे पालनहार! और मैं तेरी शरण में आता हूँ नर्क की पीड़ा और क़ब्र की पीड़ा से।) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

शाम को भी यही दुआ पढ़ना चाहिए लेकिन जहाँ «असबहना» «हम सुबह किए» है उसके बदले «अम्सैना» हम शाम किए» बोलना चाहिए, इसी तरह जहां»रब्बि अस्अलुका खैरा माफ़ी हाज़ल-यौम» (हे मेरे पालनहार! मैं तुझ से मांगता हूँ जो इस दिन में भलाई है) है उसके बदले «रब्बि अस्अलुका खैरा माफ़ी हाज़िहिल-लैलति» (हे मेरे पालनहार! मैं तुझ से मांगता हूँ जो इस रात में भलाई है) कहे।
४ –इसी तरह इन्हीं सुन्नत दुआओं में यह दुआ भी शामिल है:

«اللهم بك أصبحنا وبك أمسينا ، وبك نحيا وبك نموت وإليك النشور»

«अल्लाहुम्मा बिका अस्बहना व बिका अम्सैना, व बिका नहया व बिका नमूतु व इलैकन-नुशूर» (हे अल्लाह! तुझी के द्वारा हम सुबह किए और तुझी के द्वारा शाम किए, तुझी के द्वारा जीते हैं और तुझी के द्वारा मरते हैं, और तेरी ही ओर लौटना है।) इसे इमाम तिरमिज़ी ने उल्लेख किया है।

शाम को भी यही दुआ पढ़े गा लेकिन, लेकिन उसके शब्द इस तरह होंगे «अल्लाहुम्मा बिका अम्सैना व बिका अस्बहना व बिका नहया व बिका नमूतु व इलैकल मसीर» (हे अल्लाह! हम तुझी के द्वारा शाम किए और तुझी के द्वारा हम सुबह किए, तुझी के द्वारा जीते हैं और तुझी के द्वारा मरते हैं, और तेरी ही ओर वापिस आना है»।

५ –इसी तरह यह दुआ भी पढ़ना सुन्नत है:
«اللهم أنت ربي لا إله إلا أنت خلقتني وأنا عبدك ، وأنا على عهدك ووعدك ما استطعت أعوذ بك من شر ما صنعت أبوء لك بنعمتك على وأبوء بذنبي فاغفر لي فأنه لا يغفر الذنوب إلا أنت»

अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बि ला इलाहा इल्ला अन्ता खलक़तानी व अना अब्दुका, व अना अला अहदिका व वअदिका मसतातअतु अऊज़ु बिका मिन शाररि-मा सनअतु अबूउ बि निअमतिका अलैया व अबूउ बि ज़न्बी फग़फ़िर ली फइन्नहु ला

यग़्फ़िरुज़-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता।
(हे अल्लाह तू मेरा पालनहार है तूने मुझे बनाया है, और मैं तेरा दास हूँ और जहाँ तक मुझ से बन पड़े मैं तेरे वचन और वादे पर हूँ, मैं तेरी शरण में आता हूँ अपने करतूत की बुराई से, और जो मुझ पर तेरा कृपाहै उसे मैं मानता हूँ तो तू मुझे क्षमा कर दे, क्योंकि तेरे सिवाय पापों को कोई माफ नहीं करता है।) इसे बुखारी ने उल्लेख किया।

इसका फल यह है कि जो इस पर विश्वास करके शाम होते समय इसे पढ़ेते है और यदि उस रात में मर जाए तो स्वर्ग में प्रवेश कर जाएगा, और यही फल सुबह होते समय भी पढ़ने का है।जैसा कि खुद इस

शुभ हदीस में उल्लेखित है।

६ - इसी तरह यह दुआ चार बार पढ़ना भी सुन्नत है:

«اللهم إني أصبحت أًشهدك وأشهد حملة عرشك ، وملائكتك وجميع خلقك أنك أنت االله لا إله إلا أنت وحدك لا شريك لك وأن محمداً عبدك ورسولك»

«अल्लाहुम्मा इन्नी अस्बह्तु उशहिदुका व उशहिदु हमलता अरशिका, व मलाइकतका व जमीआ खलक़िका अन्नका अन्ता वह्दाका ला शरीका लका व अन्ना मुहम्मदन अब्दुका व रासूलुका»

(हे अल्लाह!मैंने सुबह की तुझे गवाह बनाता हूँ, और तेरे «अर्श» को उठाने वाले फरिश्तों और तेरी सारी रचना को गवाह बनाता हूँ कि तू अल्लाह है, तुझे छोड़ कर और कोई पूजनीय नहीं है, तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं है, और यह कि मुहम्मद तेरे दास और दूत हैं।इसे अबू-दाऊद ने और नसाई ने «अमलुल-यौमि वाल्लैला» (रात और दिन में किए जाने वाले काम) नामक पुस्तक में उल्लेख किया।

और इसका फल यह है कि जो भी इसे सुबह और शाम को चार बार पढ़ेगा तो अल्लाह उसे नर्क से मुक्त कर देगा।

· लेकिन शाम की दुआ में «अल्लाहुम्मा इन्नी अस्बह्तु»(हे अल्लाह मैंने सुबह की) की जगह पर»अल्लाहुम्मा इन्नी अम्सैतु» (हे अल्लाह मैंने शाम की) पढ़े:

(اللهم ما أصبح بي من نعمة أو بأحد من خلقك فمنك وحدك لا شريك لك فلك الحمد و لك الشكر)

«अल्लाहुम्मा मा अस्बहा बी मिन निअमतिन औ बि अहादिन मिन खलक़िका फमिनका वहदका ला शरीका लका फलकल-हमदु वश्शुकरु»

(हे अल्लाह ! जो भी कोई मेहरबानी मुझ पर अथवा तेरी रचनों में से किसी प्राणी पर सुबह तक रही तो वह तुझी से है तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं है, तेरे ही लिए प्रशंसा है और तेरे ही लिए धन्यवाद है। इसे अबू-दाऊद ने और नसाई ने «अमलुल-यौमि वल्लैला» (रात और दिन में किए जाने वाले काम) नामक पुस्तक में उल्लेख किया।
इसका फल यह है कि जो भी इसे सुबह होते समय पढ़ेगा, तो उसने उस दिन का शुक्रिया निभा दिया, और जो शाम होते समय इसे पढ़ेगा तो उसने उस रात का शुक्रिया अदा कर दिया।जैसा कि इसी शुभ हदीस में उल्लेखित है।

८- और तीन बार यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:

(اللهم عافني في بدني ، اللهم عافني في سمعي ، اللهم عافني في بصري ، لا إله إلا أنت ، اللهم إني أعوذ بك من الكفر ، والفقر وأعوذ بك من عذاب القبر لا إله إلا أنت)

«अल्लाहुम्मा आफिनी फी बदनी, अल्लाहुम्मा आफिनी फी सम्ई अल्लाहुम्मा आफिनी फी बसरी, ला इलाहा इल्ला अन्ता, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल-कुफरि वल-फक़रि व अऊज़ु बिका मिन अज़ाबिल-क़ब्रि ला इलाहा इल्ला अन्ता»
(हे अल्लाह!मेरे शरीर में स्वास्थ्य दे , हे अल्लाह!मेरी कान में स्वास्थ्य दे, हे अल्लाह!मेरी आंख में स्वास्थ्य दे, तुझे छोड़कर और कोई पूजनीय नहीं है, हे अल्लाह! मैं आप की शरण में आता हूँ अविश्वास से और गरीबी से, और तेरी शरण में आता हूँ क़ब्र की पीड़ा से, तुझे छोड़कर और कोई पूजनीय नहीं है। इसे अबू-दाऊद और अहमद ने उल्लेख किया है।

९ –इसी तरह सात बार यह दुआ पढ़ना चाहिए:
(حسبيالله لا إله إلا هو عليه توكلت وهو رب العرش العظيم)

«हस्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कलतु, व हुवा रब्बुल-अर्शिल-अज़ीम»

(अल्लाह मुझे काफ़ी है उसके सिवाय कोई पूजनीय नहीं है, उसी पर मैंने भरोसा किया, और वही बड़े «अर्श» का मालिक है ।इसे इब्ने-सुन्नी ने हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-के माध्यम से उल्लेख किया है, और अबू-दावूद ने «सहाबी»के माध्यम से उल्लेख किया है। उसका फल यह है कि जिसने इसे सुबह और शाम होते समय सात बार पढ़ा तो अल्लाह उसे इस दुनिया और आखिरत के चिन्तनों से मुक्त कर देगा ।जैसा कि खुद इसी शुभ हदीस में उल्लेखित है।

१० –और यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:

«اللهم إني أسألك العفو والعافية في الدنيا والآخرة ، اللهم إني أسألك العفو والعافية في ديني ودنياي وأهلي ومالي ، اللهم استر عوراتي ،وآمن روعاتي ، اللهم احفظني من بين يدي ومن خلفي وعن يميني وعن شمالي ومن فوقي ، وأعوذ بعظمتك أن أغتال من تحتي»

«अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल-अफ़वा वल-आफियता फिद्दुन्या वल-आखिरह्, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल-अफ़वा वल-आफियता फी दीनी व दुन्याय, व अहली व माली, अल्लाहुम्मुस्तुर अवराती व आमिन रवआती, अल्लाहुम्मह्फज़्नी मिन बैनि यदैय्या व मिन खल्फी व अन यमीनी व अन शिमाली व मिन फवक़ी व अऊज़ु बि अज़मतिका अन उग़ताला मिन तहती» (हे अल्लाह!मैं तुझ से दुनिया और आखिरत में क्षमा और स्वास्थ्य मांगता हूँ, हे अल्लाह!मैं तुझ से दुनिया और आखिरत में मेरे परिवार और धन में क्षमा और स्वास्थ्य मांगता हूँ, हे अल्लाह! तू मेरी कमियों पर पर्दा रख और मेरे डर को शांति में बदल दे, हे अल्लाह! तू मुझे सुरक्षा दे मेरे सामने से और मेरे पीछे से और मेरे दाहिने से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से और मैं तेरी शरण में आता हूँ कि नीचे से धोखे से मारा जाऊं ।इसे अबू- दाऊद और इब्ने-माजा ने उल्लेख किया

है।

११ –इसी तरह यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है :

«اللهم عالم الغيب والشهادة فاطر السماوات والأرض ، ربَّ كل شيء ومليكه ، أشهد أن لا إله إلا أنت ، أعوذ بِك من شر نفسي ومن شر الشيطان وشركه ، وأن أقترف على نفسي سوءاً أو أجره إلى مسلم»

«अल्लाहुम्मा आलिमल-ग़ैबि वश्शहादति फातिरस्-समावाति वल-अरज़ि, रब्बा कुल्लि शैइन व मलीकहु, अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता, अऊज़ु बिका मिन शर्रि नफ्सी व मिन शर्रिश्शैतानि व शिरकिही व अक़्तरिफा अला नफ्सी सूअन औ अजुर्रहू इला मुस्लिम»

(हे अल्लाह! देखी और अनदेखी को जानने वला! आकाशों और पृथ्वी का निर्माता!हर चीज़ का पालनहार और मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि तुझको छोड़कर कोई पूजनीय नहीं है, मैं तेरी शरण में आता हूँअपनी आत्मा की बुराई और शैतान की बुराई और उसकी मूर्तिपूजा से, और अपनी आत्मा पर कोई बुराई करने अथवा किसी मुसलमान पर बुराई डालने से तेरी शरण में आता हूँ।इसे इमाम तिरमिज़ी और अबू- दाऊद ने उल्लेख किया है।

१२ –यह दुआ तीन बार पढ़ना सुन्नत है:

«بسم الله الذي لا يضر مع اسمه شيء في الأرض ولا في السماء وهو السميع العليم»

«बिसमिल्लाहिल-लज़ी ला यज़ुरु मअसमिहि शैउन फिल-अर्ज़ि व ला फिस्समाइ व हुवससमीउल-अलीम»

(अल्लाह के नाम से शुरू जिसके नाम के साथ कोई चीज़ न पृथ्वी पर न ही आकाश में कुछ नुक़सान पहुंचा सकती है और वही सुनता जानता है। इसे अबू-दाऊद, तिरमिज़ी और इब्न-माजा और इमाम अहमद ने उल्लेख किया है।इसका फल यह है कि जो भी इसे सुबह को तीन बार और शाम को भी तीन बार पढ़ेगा तो उसे कोई भी चीज़ चोट नहीं पहुंचा सकेगी।जैसा कि खुद इस शुभ हदीस में उल्लेखित है।
१३ – इसी तरह सुन्नत दुआ में यह भी शामिल है कि इस दुआ को तीन बार पढ़े :

«رضيت بالله ربًا وبالإسلام دينًا وبمحمد – صلى الله عليه وسلم- نبيا»

«रज़ीतु बिल्लाहि रब्बा, व बिलइस्लामि दीना, व बिमुहम्मादिन - सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम - रसूला «(मैं संतुष्ट हूँ अल्लाह के पालनहार होने से, और इस्लाम के धर्म होने से और मुहम्मद-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-के

दूत होने से ।)इसे अबू-दाऊद , तिरमिज़ी, इब्ने-माजा और नसाई और अहमद ने उल्लेख किया है ।इसका फल यह है कि जो भी इसे सुबह और शाम के समय तीन बार पढ़ेगा तो अल्लाह के सामने उसका अधिकार होगा कि क़ियामत के दिन उसको प्रसन्न कर दे ।जैसा कि खुद इसी शुभ हदीसमें उल्लेखित है।

१४ –इसी तरह यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:

«يا حي يا قيوم برحمتك أستغيث أصلح لي شأني كله ولا تكلني إلى نفسي طرفة عين»

«या हय्यु या क़य्यूमु बि रहमतिका अस्ताग़ीसु, असलिह् ली शअनी कुल्लहू वला तकिलनी इला नफ्सी तरफता ऐन» (हे जिवित! हे स्वंय ही बरक़राररहने वाला, तेरी दया का सहारा मांगता हूँ, मेरे सारे काम को ठीक करदे और तू मुझे एक पलक झिपने भर केलिए भी मेरे स्वंय के हवाले मत कर ।) इसे हाकिम ने उल्लेख किया है और इसे विश्वसनीय बताया और इमाम ज़हबी ने इस में उनका समर्थन किया है।

१५ –और यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत में शामिल है जिसके शब्द इस तरह हैं:

(أصبحنا على فطرة الإسلام وكلمة الإخلاص ودين نبينا محمد وملة أبينا إبراهيم حنيفا مسلما وما كان من المشركين)

«अस्बहना अला फितरतिल इस्लामि व कलिमातिल-इख्लासि व दीनि नबिय्यिना मुहम्मद, व मिल्लति अबीना इबराहीमा हानीफन मुस्लिमन व मा काना मिनल- मुशरिकीन»

(हम इस्लाम के स्वभाव, पवित्रता के शब्द और हमारे पैगंबर मुहम्मद के धर्म और हमारे पिता इबराहीम पंथ पर सुबह किए, जो मूर्तिपूजा से अलग-थलग रहकर मुसलमान थे, और मूर्तिपूजकों में से नहीं थे ।इसे इमाम अहमद ने उल्लेख किया।

१६ –और यह शब्द १०० बार पढ़े:

« سبحان الله وبحمده»

«सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही» (प्रशंसा के साथ पवित्रता हो अल्लाह के लिए) इसे ईमान मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

इसका फल यह कि जो भी इसे सुबह्-शाम सौ १०० बार पढ़ेगा तो क़ियामत के दिन वह उन सब में सब से बेहतर होगा जिनके पास कुछ (पुण्य का काम) होगा सिवाय उसके जिसने उसी की तरह अथवा उससे कुछ बढ़ कर पढ़ा होगा ।इस के इलावा उसका फल यह भी है कि उसके सारे पापों को मिटा दिया जाएगा भले ही समुद्र के झाग के बराबर हों ।
१७ – और सुबह के समय सौ १०० बार यह दुआ पढ़े:

«لا إله إلا االله وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير»

«ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु, लहुल-मुल्कु व लहुल-हमदु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर»

(अल्लाहको छोड़ कर कोईपूजे जाने के योग्य नहींहै, अकेला है उसका कोई साझी नहीं हे, उसी का राज है और उसी केलिए सारी प्रशंसा है और वही सब चीज़ पर शक्तिशाली है।) इसे इमाम बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है ।

इसे पढ़ने के फल निम्नलिखित हैं:
१) दस ग़ुलाम आज़ाद करने का पुण्य मिले गा ।
२) उसके लिए सौ १०० पुण्य लिखा जाएगा ।
३) उसके सौ १०० पाप मिटा दिए जाएँगे ।
४) उस दिन शाम होने तक शैतान से सुरक्षा हो जाएगा ।जैसा कि खुद इस शुभ हदीस में उल्लेखित है ।
१८ –और दिन में सौ १०० बार यह दुआ पढ़ना भी सुन्नत है:
«أستغفراالله وأتوب إليه»
«अस्तग़फिरुल्लाहा व अतूबु इलैहि»
(मैं अल्लाह से क्षमा मांगता हूँ और उसके लिए पश्चाताप करता हूँ ।)इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है ।
१९ – और सुबह के समय यह दुआ पढ़ना चाहिए:

«اللهم إني أسألك علماً نافعاً ورزقًا طيبًا وعملاً متقبلا»

«अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका इल्मन नाफिआ, व रिज़्क़न तय्यिबा व अमलन मुतक़ब्बला» (हे अल्लाह!मैं तुझ से लाभप्रद ज्ञान और पवित्र रोज़ी और स्वीकार्य कर्म मांगता हूँ।)

२० –और तीन बार यह दुआ पढ़े:

«سبحان الله وبحمده ، عدد خلقه ورضا نفسه وزنة عرشه ومداد كلماته»

«सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अददा खलक़िही व रिज़ा नफ्सिही व ज़िनता अर्शिहि व मिदादा कलिमातिही»

(अल्लाह को पवित्रता है उसकी प्रशंसा के साथ, उसकी रचना की संख्या भर, और उसकी आत्मा की प्रसन्नता के बराबर, और उसके «अर्श» के वज़न के बराबर, और उसके शब्दों की स्याही के बराबर।) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

२१ –और शाम होते समय तीन बार यह दुआ पढ़े:

«أعوذ بكلمات الله التامات من شر ما خلق»

«अऊज़ु बि कलिमातिल्लाहित-ताम्माति मिन शर्रि मा खलक़»

(अल्लाह के पूर्ण शब्दों के द्वारा मैं शरण मांगता हूँ, उस चीज़ की बुराई से जो उसने रचा है।) इसे तिरमिज़ी, इब्ने- माजा और अहमद ने उल्लेख किया है।
* याद रहे कि जब जब भी इन दुआओं में से किसी भी दुआ को पढ़ेगा तो एक सुन्नत पर अमल होगा, इसलिए एक मुसलमान को अपने सुबह और शाम को इन दुआओं को पढ़ने का प्रयास करना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक सुन्नत पर अमल करने का पुण्य प्राप्त कर सके।

* इसी तरह एक मुसलमान को ईमानदारी, विश्वास, पवित्र हृदयके साथ इन दुआओं को पढ़ना चाहिए और इनके अर्थों को दिल-दिमाग़ में बसाना चाहिए ताकि उसका प्रभाव उसकी जीवन, चरित्र और व्यवहार पर भी नज़र आ सके।

लोगों से भेंट करते समय की सुन्नतें

१) सलाम करना: क्योंकि हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-से पूछा गया कि कौनसा इस्लाम सब से अच्छा है? तो उन्होंने कहा: (आप भोजन खिलाएं औरसलाम करें जिसको आप पहचानें उसको भी और जिसको न पहचानें उसको भी।) इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया।

• एक आदमी हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-के पास आया और कहा «अस्सलामु-अलैकुम» (शांति हो आप पर) तो उन्होंने सलाम का जवाब दिया, फिर वह बैठ गया, तो हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा: दस (१०)(यानी दस पुण्य)।उसके बाद एक दूसरा आदमी आया और कहा: «अस्सलामु-अलेकुम व रहमतुल्लाहि» (शांति और अल्लाह की दया हो आप पर) तो उन्होंने उसके सलाम का जवाब दिया और फिर वह बैठ गया, तो हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा: बीस (२०) (यानी बीस पुण्य)।उसके बाद एक और व्यक्ति आया और उसने कहा: «अस्सलामु-अलेकुम व रहमतुल्लाहि व बराकातुहू» (शांति और अल्लाह की दया और उसकी बर्कतें हो आप पर) तो उन्होंने उसके सलाम का जवाब दिया और वह बैठ गया तो हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा: तीस (३०)(यानी तीस पुण्य)।इसे अबू-दाऊद ने उल्लेख किया है और तिरमिज़ी ने इसे विश्वसनीय बताया है।

• अल्लाह आपको अच्छा रखे! देखा आपने कि जिसने पूरा सलाम न करके केवल कुछ शब्द पर ही बस कर दिया तो उसने कितने पुण्य से अपने आपको वंचित रखा, यदि वह पूरा सलाम करता तो उसे तीस पुण्य मिल जाते थे।याद रहे कि एक पुण्य की कम से कम क़ीमत दस पुण्य के बराबर होती है।इस तरह उसे ३०० (तीन सौ) पुण्य मिल जाते थे ।और कभी कभी तो एक पुण्य की क़ीमत अल्लाह के पास काई कई गुने होते हैं।

• इसलिए मेरे प्रिय भाई! आप अपनी जीभ को इस बात की आदत लगाइए और सलाम को सदा पूरा कहा करें और «अस्सलामु-अलेकुम व रहमतुल्लाहि व बराकातुहू» (शांति और अल्लाह की दया और उसकी बर्कतें हो आप पर) कहा करें ताकि आपको यह सारा पुण्य प्राप्त होसके।

• ज्ञात हो कि एक मुसलमान अपने दिन और रात में कई कई बार सलाम करता है, मस्जिद में प्रवेश करते समय और मस्जिद से निकलते समय इसी तरह घर से

निकलते समय और घर में प्रवेश करते समय भी सलाम करता है।

• मेरे भाई! यह मत भूलिए कि जब एक व्यक्ति किसी से जुदा होता है तो सुन्नत है कि पूरा पूरा सलाम के शब्द बोले क्योंकि शुभ हदीस में है: जब तुम में से कोई किसी बैठक में पहुंचे तो सलाम करे, और जब जुदा हो तो भी सलाम करे, क्योंकि पहली दूसरी से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है।(यानी दोनों मिलते समय और जुदा होते समय सलाम करना महत्वपूर्ण हैं) इसे अबू-दाऊद और तिरमिज़ी ने उल्लेख किया है।

• यदि एक व्यक्ति इसकी पाबंदी करता है तो मसजिद से घर और घर से मसजिद को आते जाते इस सुन्नत की कुल संख्या बीस २० बार हो जाती है, और इसकी संख्या बढ़ भी सकती है यदि घर से काम के लिए निकलता है और रास्ते में लोगों से भेंट होती है, अथवा जब किसी से फोन पर बात करता है और सलाम करता है।

२– मिलते समय मुस्कुराना: क्योंकि हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा:» पुण्यों में से किसी भी पुण्य को हरगिज़ घटिया मत समझो, भले ही अपने भाई से मुस्कुराकर मिलने का पुण्य ही हो।» इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

३– मिलते समय हाथ मिलाना: क्योंकि हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा: जब भी दो मुसलमान मिलते हैं और एक दूसरे से हाथ मिलाते हैं तो दोनों के जुदा होने से पहले उन्हें क्षमा दे दिया जाता है।

इसे अबू-दाऊद, तिरमिज़ी और इब्ने-माजा ने उल्लेख किया है।

इमाम नवावी ने कहा है : ज्ञात होना चाहिए कि प्रत्येक भेंट के समय हाथ मिलाना पसंदीदा बात है।

• तो सम्मानित भाई! ख्याल रखिए और जिस से भी मिलिए तो सलाम कीजिए और उनसे मुस्कुरा कर हाथ मिलाइए, इस तरह आप एक ही समय में तीन सुन्नतों पर अमल करेंगे।

४– अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कहा:

وَقُلْ لِعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُبِينًا (الإسراء:٥٣)

«मेरे बन्दों से कह दो कि: बात वही कहें जो उत्तम हो।शैतान तो उनके बीच उकसाकर फ़साद डालता रहता है।निस्संदेह शैतान मनुष्य का प्रत्यक्ष शत्रु है

।[बनी-इसराईल: ५३]

- और हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा:(अच्छा शब्द एक दान है) इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है।
- अच्छा शब्द में क्या क्या बातें शामिल हैं?: इस में अल्लाह के ज़िक्र सहित , दुआ, सलाम किसी की उचित प्रशंसा, अच्छे शिष्टाचार, नैतिकता, भले बर्ताव और अच्छे कार्य सभी शामिल हैं।

•अच्छा शब्द का असर: अच्छा शब्द मनुष्य पर जादू का काम करता है, मनुष्य को आराम देता है और उसके दिल को शांति से भर देता है।

• अच्छाशब्द के लाभ: अच्छाशब्द तो एक मोमिन के दिल में छिपे प्रकाश, मार्गदर्शन और सीधे रास्ते पर होने की निशानी है।

• तो मेरे सम्मानित भाई! क्या आपने इस विषय में कभी सोचा कि अपनी पूरी जीवन को सुबह से लेकर शाम तक अच्छे और पवित्र शब्दसे आबाद रखेंगे, क्योंकि आपकी पत्नी आपके बच्चे, आपके पड़ोसी, आपके दोस्त, आपके नौकर और जिस जिस के साथ भी आप बर्ताव करते हैं सब के सब अच्छे शब्द के ज़रूरतमंद और पियासे हैं।

भोजन खाने के समय की सुन्नतें

• भोजन करने के दौरान और उसके पहले की सुन्नतें:
१-भोजनशुरू करने से पहले «बिस्मिल्लाह» पढ़ना सुन्नत है: उसके शब्द यह हैं:
(بسم اللہ الرحمن الرحيم)
«बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम (अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यंत दयावान है।»
२ - दाहिने हाथ से खाना।

३– पास के भोजन को ही खाना।
यह सारी सुन्नतें एक ही हदीस में जमा हैं जिस में आया है :» हे लड़का! अल्लाह का नाम लेकर शुरू करो, और आपने दाहिने हाथसे खाओ , और जो तुम्हारे नज़दीक है वह खाओ।» इसे इमाम मुस्लिन ने उल्लेख किया है।
४– यदि लुक़मा (या कौर) गिर जाए तो उसे साफ़ करके खा लेना चाहिए , क्योंकि शुभ हदीस में है: «जब तुम में से किसी का लुक़मा (या कौर) गिर जाए तो उस में से हानिकारक वस्तु को निकाल दे और फिर उसे खाले।» इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।
५- तीन अंगुलियों के द्वारा खाना: शुभ हदीस में है कि:» हज़रत पैगंबर- उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-तीन अंगुलियों के द्वारा खाते थे»। इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, अधिकतर उनका यही तरीक़ा था और यही बेहतर भी है।लेकिन यदि मजबूरी हो तो कोई बात नहीं है।
६- खाने केलिए बैठने का तरीक़ा: खाने केलिए बैठने का तरीक़ा यह है कि अपने दोनों घुटनों और दोनों पैरों के तलवों पर बैठे, अथवा अपने दाहिने पैर को खड़ा रखे और बाएं पैर पर बैठे, और यही बेहतर तरीक़ा है।इसे हाफिज़ इब्ने-हजर ने «फत्हुल-बारी» में उल्लेख किया है।
• इसी तरह खाने के बाद भी कुछ सुन्नतें हैं :

१– खाने की प्लेट और उंगलियों को चाटना: क्योंकि -हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो- उंगलियों और प्लेट को चाटने का आदेश देते थे और कहते थे :क्योंकि तुम नहीं जानते हो कि बरकत किस में है ?
२- खाने के बाद अल-हमदु-लिल्लाह-(अल्लाह का शुक्र है) कहना:क्योंकि शुभ हदीस में है: « निस्संदेह अल्लाह दास से प्रसन्न होता है, यदि वह खाना खता

है और उसपर उसका शुक्र अदा करता है।» इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो- खाने के बाद यह दुआ पढ़ा करते थे:

«الحمد الله الذي أطعمني هذا ورزقنيه من غير حول مني ولا قوة»

«अल-हमदु लिल्लाहिल-लज़ी अतअमनी हाज़ा व रज़क़नीहि मिन ग़ैरि हव्लिन मिन्नी व ला क़ुव्वह» (अल्लाह के लिए शुक्र है जिसने मुझे यह खिलाया और जिसने मुझे यह रोज़ी दी है बिना मेरी शक्ति और बल के।» इस दुआ को पढ़ने का फल यह है कि उसके पिछले सारे पापों को क्षमा कर दिया जाता है।इसे अबू-दाऊद, तिरमिज़ी और इब्ने- माजा ने उल्लेख किया है , और हाफिज़ इब्ने-हजर और अल्बानी ने इसे सही बताया है।

• याद रहे कि उन सुन्नतों की कुल संख्या १५ (पंद्रह) होती हैं जिन्हें एक मुसलमान व्यक्ति खाने के समय लागू करने का प्रयास करता है , यह बात उस आदत पर आधारित है जिसमें एक व्यक्ति रात और दिन में तीन बार खाता है, जैसा की अधिकांश लोगों की आदत है, लेकिन इस सुन्नत की संख्या बढ़ भी सकती है यदि इन तीनों खानों के बीच हल्केफुल्के नाश्तों को भी शामिल कर लिया जाए।

पीने के समय की सुन्नतें

१–पीने से पहले “बिस्मिल्लाह” पढ़ना सुन्नत है: उसके शब्द यह हैं:

(بسم الله الرحمن الرحيم)

“बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम (अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यंत दयावान है) ।

२ - दाहिने हाथ से पीना: क्योंकि शुभ हदीस में आया है :” हे लड़का! अल्लाह का नाम लेकर शुरू करो, और आपने दाहिने हाथसे खाओ ।”

३ - पीने के दौरान बर्तन के बाहर सांस लेना : मतलब: तीन बार में पिए एक ही बार में न पी डाले ।क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो- पीने के दौरान तीन बार सांस लेते थे(यानी बर्तन के बाहर) । इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है ।

४ – बैठकर पीना : क्योंकि हदीस में आया है:” तुम में से कोई भी हरगिज़ खड़ा रहकर न पिए ।”इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है ।

५ – पीने के बाद अल-हमदु-लिल्लाह-(अल्लाह का शुक्र है) कहना: क्योंकि शुभ हदीस में है:” निस्संदेह अल्लाह दास से प्रसन्न होता है, यदि वह खाना खता है और उसपर उसका शुक्र अदा करता है और पीने की चीज़ पीता है तो उस पर उसका शुक्र अदा करता है ।”इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है ।

और उन सुन्नतों की कुल संख्या २० (बीस) होती हैं जिन्हें एक मुसलमान व्यक्ति पीने के समय लागू करने का प्रयास करता है।याद रहे कि इस सुन्नत की संख्या बढ़ भी सकती है यदि शरबत या चाय या दूसरी पिने की चीजों को भी इस में शामिल कर लिया जाए ।क्योंकि कुछ लोग इन चीजों को पीते समय इस पर ध्यान नहीं देते हैं इसलिए सावधान रहें ।

न्फ्ल नमाजें घर में पढ़ना

१ – हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा: निस्संदेह आदमी की नमाज़ अपने घर में सब से अच्छी है सिवाय फ़र्ज़ नमाज़ के।बुखारी और मुस्लिम दोनों इस पर सहमत हैं।
२ - हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा: आदमी की नफ्ल नमाज़ ऐसी जगह पर जहाँ उसे लोग न देखें लोगों की आंखों के सामने उसकी नमाज़ की तुलना में २५ (पचीस) नमाज़ों के बराबर है।इसे अबू-यअला ने उल्लेख किया है और अल्बानी ने इसे सही बताया है।
३ -हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा:
अपने घर में आदमी की नमाज़ की गुणवत्ता उसकी तुलना में जाहां लोग देखते हैं ऐसी ही है जैसे फर्ज़ नमाज़ कीगुणवत्तान्फ्ल पर है।इसे उसे अत-तबरीनी ने उल्लेख किया है और अल्बानी ने इसे विश्वशनीय बताया।

• इस आधार पर रात और दिन में ज़ुहा की नमाज़ (यानी दिन चढ़ने के समय की नमाज़) और वितर नमाज़ सहित असीम सुन्नतों (यानी ग़ैर- मुअक्कदा सुन्नतों) की संख्या बहुत होजाती है, और यदि एक व्यक्ति उसे अपने घर में पढ़ने का प्रयास करता है तो उसे बड़ा पुण्य प्राप्त होगा और सुन्नत पर भी अमल हो जाएगा।

इन सुन्नतों को घर में पढ़ने के फल:

सुन्नतों को घर में पढ़ने से यह बात स्पष्ट होती है कि श्रद्धालु केवल अल्लाह हीकेलिए श्रद्धा और भक्ति कर रहा है, इसके द्वारा व्यक्ति दिखावे के गुमान से भी दूर रहता है।
क) सुन्नतों को घर में पढ़ने से घर में भी दया उतरती है , और शैतान घर से भाग जाता है।
ख) इस के द्वारा पुण्य की संख्या में भी कई कई गुना बढ़ावा मिलता है जैसे फ़र्ज़ को मस्जिद में पढ़ने से कई गुना बढ़कर पुण्य प्राप्त होता है उसी तरह न्फ्ल को घर में पढ़ने से अधिक पुण्य प्राप्त होता है।

बैठक में से उठते समय की सुन्नतें

किसी भी बैठक में से उठते समय "काफ्फारतुल-मजलिस" (यानी बैठक का क्षतिपूरण)पढ़ना सुन्नत है, और उसके शब्द कुछ इस तरह हैं:

"سبحانك اللهم وبحمدك أشهد أن لا إله إلا أنت ، استغفرك وأتوب إليك"

"सुब्हानकल्लाहुम्मा व बि-हम्दिका, अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता, अस्तग़फिरुका व अतूबु इलैका"
(हे अल्लाह! पवित्रता हो तुझे और तेरी ही लिए प्रशंसा है, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवाय और कोई पूजनीय नहीं है, मैं तुझी से माफ़ी चाहता हूँ और तेरे पास ही पश्चात्ताप करता हूँ।) इसे "सुनन" के लेखकों ने उल्लेख किया है।

• ज्ञात हो कि एक मुसलमान व्यक्ति अपने दिन और रात में कितनी सारी बैठकों में बैठता, निस्संदेह बहुत सारी बैठकें हैं, उन्हें हम निचे खोल खोल कर उल्लेख करते हैं:
१) - तीन बार खाना खाने की बैठक: इसमें कोई शक नहीं है कि आप जिसके साथ भी बैठेंगे तो उनके साथ बात तो करेंगे ही।

२- जब आप अपने दोस्तों या अपने पड़ोसियों में से किसी से मिलते हैं तो उस से बात करते ही हैं , भले ही खड़े खड़े सही।
३- सहयोगियों और मित्रों के साथ बैठने के समय अथवा जब आप कार्यालय में होते हैं या स्कूल के बेंच पर बैठे होते हैं।
४- जब आप अपनी पत्नी और अपने बच्चों के साथ बैठते हैं और आप उनसे बात करते हैं और वे आप से बात करते हैं।
५- जब आप अपने रास्ते में गाड़ी में होते हैं और जो भी आपके साथ उस रास्ते में होता है, पत्नी या दोस्त उनके साथ बात करते ही हैं।

६-जब आप अपने व्याख्यान या पाठ के लिए जाते हैं।

• तो देखए -अल्लाह आपको अच्छा रखे- कि अपने दिन और रात में आपने कितनी बार इस दुआ को पढ़ा है? ताकि लगातार आपका लगाव अल्लाह से लगा रहे, ज़रा सोचिए कि आपने कितनी बार अपने पालनहार की पवित्रता प्रकट किया? और कितनी बार उसकी महानता को बयान किया? और कितनी बार आपने उसकी प्रशंसा की? और कितनी बार "सुब्हानाकल्लाहुम्मा व बि-हम्दिका"(हे अल्लाह! पवित्रता हो तुझे और तेरी ही लिए प्रशंसा है) के द्वारा उसकी पवित्रता को सपष्ट किया ?

• अपने दिन और रात में कितनी बार आपने अपने पालनहार के साथ नए सिरे से माफ़ी-तलाफ़ी और तौबा-तिल्ला किया, उन बैठकों में आप से हुई गलती-भुल्ती से "सुब्हानाकल्लाहुम्मा व बि-हम्दिका"(हे अल्लाह! पवित्रता हो तुझे और तेरी ही लिए प्रशंसा है) के माध्यम से माफ़ी मांगी?

• कितनी बार आपने अल्लाह सर्वशक्तिमान के एकेश्वरवाद को बयान किया, और कितनी बार पालन करने में उसकी एकता, पूजा में उसकी एकता और उसके नाम और उसके गुण में उसकी एकता को स्पष्ट किया? और कितनी बार "अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता" (मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवाय और कोई पूजनीय नहीं है) के द्वारा उसकी एकता का गुणगान किया ?

• यदि आप इस सुन्नत पर अमल करते हैं तो आपके दिन-रात अल्लाह की एकता बयान करने और माफ़ी मांगने और आपसे से हुई कमियों से तौबा में गुज़रेंगे।

इस सुन्नत को लागू करने के परिणाम:

इस सुन्नत पर अमल करने से उन बैठकों में हुए पापों और गलतियों के लिए परिहार प्राप्त होगा।
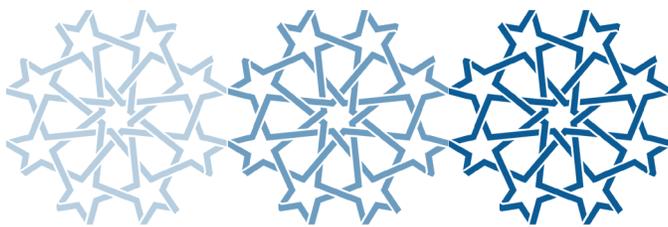
सोने से पहले की सुन्नतें

१- सोने से पहलेयह दुआ पढ़े:

"باسمك اللهم أموت وأحيا"

"बिस्मिकल्लाहुम्मा अमूतु व अहया" (हे अल्लाह! मैं तेरे ही नाम पर मरता हूँ और जीता हूँ।इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है।

२– अपनी दोनों हथेलियों को इकठ्ठा करे और सूरह " क़ुल हुवल्लाहु अहद" और क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल- फलक़ " और " क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन-नास" पढ़कर उसमें फूंके और चेहरा, सिर सहित जहाँ तक शरीर पर हाथ पहुँच सके हाथ फेरे, इस तरह तीन बार करे।इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है।

३- "आयतल-कुर्सी" यानी अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल- हय्युल-क़य्यूम पढ़े।इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है।

• इस आयत को पढ़ने के फल : जो भी इसे पढ़ेगा तो अल्लाह की ओर से उस पर लगातार एक रक्षक मुतय्यन रहेगा और शैतान उसके पास फटकेगा भी नहीं।जैसा कि ऊपर की हदीस में है।

४– और फिर यह दुआ पढ़े :

"باسمكربي وضعت جنبي وبك أرفعه ، إن أمسكت نفسي فارحمها وإن أرسلتها فاحفظها بما تحفظ به عبادك الصالحين"

"बिस्मिका रब्बी वज़अतु जंबी व बिका अर्फ़उहू, इन अम्सकता नफ्सी फर्हम्हा व इन अर्सल्तहा फह्फज़्हा बिमा तह्फज़ु बिही इबादकस-सालिहीन"

(हे मेरे पालनहार! मैंने तेरे नाम से अपने पहलू को रखा और तेरे द्वारा ही उसे उठाऊंगा, यदि तू मेरी आत्मा को रोक लेता है तो तू उस पर दया कर, और यदि छोड़ देता है तो तू उसके द्वारा उसकी रक्षा कर जिसके द्वारा अपने विशेष दासों की रक्षा करता है।इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

५– और फिर यह दुआ पढ़े:

"اللهم إنك خلقت نفسي وأنت توفاها ، لك مماتها ومحياها إن أحييتها فاحفظها ، وإن أمتها فاغفر لها ، اللهم إني أسألك العافية"

(हेअल्लाह! तू ने मेरी आत्मा को बनाया, और तू ही उसे निधन देता है, तेरे ही लिए उसकी जीवन और उसका निधन है,यदि तू उसे जीवन देता है तो उसकी रक्षा कर और यदि तू उसे मौत देता है तो उसे माफ़ कर दे,हे अल्लाह! मैं तुझ से स्वास्थ्य मांगता हूँ।इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

६- और तीन बार यह दुआ पढ़े:

"رب قني عذابك يوم تبعث عبادك"

"रब्बि क़िनी अज़ाबका यौमा तबअसु इबादक"
(हे मेरे पालनहार! तू मुझे उस दिन अपनी पीड़ा से बचा जब तू अपने दासों को उठाएगा) इसे अबू-दाऊदऔर तिरमिज़ी ने उल्लेख किया है।यह दुआ उस समय पढ़ना चाहिए जब अपने दाहिने हाथ अपने गाल के नीचे रखे।
७–इसी तरह तेंतीस (३३) बार(سبحان الله) "सुब्हानल्लाह"(ख़ूब पवित्रता है अल्लाह के लिए) और तेंतीस (३३) बार ((الحمد الله(अल-हम्दुलिल्लाह))प्रशंसा है अल्लाह के लिए(और चौंतीस (३४) बार " "الله أكبر"अल्लाहु अकबर"(अल्लाह बहुत बड़ा है) पढ़े।इसे इमाम बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

८–और फिर यह पढ़े:
"الحمد الله الذي أطعمنا وسقانا وكفانا وآوانا ، فكم ممن لا كافي ولا مأوي"

"अल-हमदु लिल्लाहिल-लज़ी अतअमना, व सक़ाना व कफाना व आवाना, फ कम मिम्मन्न ला काफिया व ला मअवा"
(सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जिसने हमें खिलाया और हमें पिलाया, और हमारे लिए काफ़ी हुआ और हमें पनाह दिया, जबकि कितने ऐसे हैं जिसका न कोई काफ़ी होने वाला है और न कोई पनाह है।) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।
९- –इसी तरह यह दुआ पढ़ना चाहिए:
"اللهم عالم الغيب والشهادة فاطر السماوات والأرض ، ربّ كل شيء ومليكه ، أشهد أن لا إله إلا أنت ، أعوذ بك من شر نفسي ومن شر الشيطان وشركه ، وأن أقترف على نفسي سوءاً أو أجره إلى مسلم"

"अल्लाहुम्मा आलिमल-ग़ैबि वश्शहादति फातिरस्-समावाति वल-अरज़ि, रब्बा कुल्लि शैइन व मलीकहु, अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता, अऊज़ु बिका मिन शर्रि नफ्सी व मिन शर्रिश्शैतानि व शिरकिही व अक़तरिफा अला नफ्सी सूअन औ अजुर्रहू इला मुस्लिम"
(हे अल्लाह! देखी और अनदेखी को जानने वला! आकाशों और पृथ्वी का निर्माता!हर चीज़ का पालनहार और मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि तुझको छोड़कर कोई पूजनीय नहीं है, मैं तेरी शरण में आता हूँअपनी आत्मा की बुराई

और शैतान की बुराई और उसकी मूर्तिपूजा से, और अपनी आत्मा पर कोई बुराई करने अथवा किसी मुसलमान पर बुराई डालने से तेरी शरण में आता हूँ।) इसे अबू-दाऊद और तिरमिज़ी ने उल्लेख किया है।

१० – और यह दुआ पढ़े:

"اللهم أسلمت نفسي إليك ، وفوضت أمري إليك ، ووجهت وجهي إليك ، وألجأت ظهري إليك ، رغبة ورهبة إليك لا ملجأ ولا منجا إلا إليك ، آمنت بكتابك الذي أنزلت وبنبيك الذي أرسلت"

"अल्लाहुम्मा अस्लम्तुनफ्सी इलैका, व फव्वज़तु अम्री इलैक, व वज्जह्तु वजही इलैक, व अल्जअतु ज़हरी इलैक, रग़बतन व रह्बतन इलैक, ला मल्जअ व ला मनजा इल्ला इलैक, आमन्तु बि किताबिकल-लाज़ी अन्ज़लता व बि नबिय्यिकल-लाज़ी अरसलत"
(हे अल्लाह! मैंने अपनी आत्मा को तेरे हिवाले किया, और मैंने अपने कार्य को तेरे सुपुर्द किया, और मैंने अपने चेहरे को तेरी ओर फेर दिया, और मैंने अपनी पीठ को तेरे हवाले किया , तुझ से उम्मीद करके और तुझ से डरते हुए, कोई शरण नहीं और कोई बचने का रास्ता नहीं है मगर तेरे सहारे , मैंने तेरी उस पुस्तक पर विश्वास किया जो तू ने उतारी है , और तेरे उस दूत पर विश्वास किया जिसे तू ने भेजा है।) इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया।

११– और फिर यह दुआ पढ़े:

"اللهم رب السماوات السبع ورب العرش العظيم ، ربنا ورب كل شيء فالق الحب والنوى ، ومنزل التوراة والإنجيل والفرقان ، أعوذ بك من شر كل شيء أنت آخذ بناصيته ، اللهم أنت الأول فليس قبلك شيء ، وأنت الآخر فليس بعدك شيء ، وأنت الظاهر فليس فوقك شيء ، وأنت الباطن فليس دونك شيء ، إقض عنا الدين وأغننا من الفقر"

"अल्लाहुम्मा रब्बस-समावातिस्-सबइ व रब्बल-अर्शिल-अज़ीम, रब्बा व रब्बा कुल्लि शै, फालिक़ल-हब्बि वन्-नवा, व मुन्ज़िलत-तौराति वल-इनजीलि वल-फुरक़ान, अऊज़ु बिका मिन शर्रि कुल्लि शैइन अन्ता आखिज़ुनबिनासिय्तिह, अल्लाहुम्मा अन्तल-अव्वलु फलैसा क़ब्लका शै, व अन्तल-आखिरु फलैसा बअदका शै, व अन्तज़-ज़ाहिरु फलैसा फव्क़का शै, व अन्तल-बातिनु फलैसा दूनका शै, इक़ज़ि अन्नद-दैना व अग़निना मिनल-फक़्र"
(हे अल्लाह! सातों आकाशों का मालिक! और सम्मानित "अर्श" के मालिक! हे मेरे मालिक और हर चीज़ के मालिक! दानों और गुठलियों से (फल-फूल)

खिलाने वाला! "तौरात" इंजील और फुरक़ान(कुरान) को उतारने वाला! मैं हर उस चीज़ की बुराई से तेरी शरण में आता हूँ जिसकी पेशानी को तू पकड़े हुए है।हे अल्लाह! तू पहला है, तो तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं है, और तू ही आखिर है तो तेरे बाद कोई चीज़ नहीं है , और तू ही प्रत्यक्षहै तो तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं है,और तू ही परोक्षहै तो तेरे से नीचे कोई चीज़ नहीं है , हमारी ओर से हमारे कर्ज़ को चुका दे, और हमारी ग़रीबी को दूर करके हमें मालामाल करदे।) इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

१२– इसी तरह सूरह "बक़रा" की आखिरी दो आयत " آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَإِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ " आमनर-रसूलु बिमा उनज़िला इलैही मिर्-रब्बिही वाल-मुअमिनून"(रसूल उसपर जो कुछ उसके रब की ओर से उसकी ओर उतरा ईमान लाया और ईमानवाले भी .) से आखिर तक पढ़े। क्योंकि सुभ हदीस में है: जो भी इन दोनों को पढ़ेगा तो वह दोनों उसे काफी होगी।इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

•: इस हदीस में जो अरबी शब्द ((كفتاه" कफताहू"आया है उसके अर्थ पर विद्वानों के बीच मतभेद है , कुछ लोगों का कहना है कि उसका मतलब यह है कि वे दोनों रात की नमाज़ की जगह काफी है , और कुछ लोगों का कहना हैं कि उसका मतलब यह है कि वे दोनों आयतें हर प्रकार की बुराई, दुख और कठनाई को दूर करने के लिए काफी है।लेकिन दोनों अर्थ एक ही साथ सही होसकते हैं।इस बात को इमाम नववी ने "अल-अज़कार" नामक पुस्तक में उल्लेख किया है।

१३– सोने के समय पवित्र रहना चाहिए क्योंकि शुभ हदीस में है:" जब बिस्तर पर आते हो तो पहले वुज़ू कर लो।"

१४– दाहिने पहलू पर सोना चाहिए: क्योंकि शुभ हदीस में आया है:" फिर तुम अपने दाहिने पहलू पर सोओ।" इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

१५- और अपने दहिने हाथ को दाहिने गाल के नीचे रखे।जैसा कि शुभ हदीस में है: "जब तुम में से कोई अपने बिस्तर पर आए तो अपने बिस्तर को झाड़ ले, क्योंकि उसे पता नहीं है कि उसके बाद उसपर क्या आ पड़ा है?" इसे बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

१६– सोने से पहले "قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ" (क़ुल या अय्युहल-काफिरून) पढ़ना: और उसका फल यह है कि उसके द्वारा "शिर्क" मूर्तिपूजा से मुक्त हो जाएगा।इसे अबू-दाऊद, तिरमिज़ी और अहमद ने उल्लेख किया है, और इब्ने-हिब्बान और हाकिम ने इसे "सहीह" कहा है और ज़हबी ने इसपर समर्थन किया, और हाफ़िज़

इब्ने-हजर ने भी इसे विश्वशनीय बताया और अल्बानि ने इसे सही कहा है।

• सोने से पहले की सुन्नत के संबंध में इमाम नववी ने कहा: कोई भी व्यक्ति इस खंड में वर्णित सभी नियमों पर एक साथ अमल कर सकता है, और यदि न हो सके तो उनमें से जो जो अधिक महत्वपूर्ण है उस पर अमल कर ले।

•याद रहना चाहिए किखोज करने से हमें पता चलता है कि:ज्यादातर लोग दिन और रात में दो बार तो सोते ही हैं और इस आधार पर एक व्यक्ति कम से कम दो बार इन सारी सुन्नतों अथवा उन में से कुछ सुन्नत पर अमल कर सकता है।क्योंकि यह सुन्नतें केवल रात की नींद के लिए ही विशेष नहीं है बल्कि इस में दिन की नींद भी शामिल है।यह इसलिए कि सुभ हदीसों में रात दिन किसी को भी विशेष नहीं किया गया है।

सोने के समय इन नियमों पर अमल करने के परिणाम:

१) यदि एक मुसलमान सोने से पहले बराबर इन दुआओं को पढ़ता है तो उसके लिए सौ (१००) दान लिखा जाएगा, क्योंकि शुभ हदीस में है :" प्रत्येक सुब्हानल्लाह" (पवित्रता है अल्लाह के लिए) एक दान है, और प्रत्येक "अल्लाहु अकबर"(अल्लाह बहुत बड़ा है) एक दान है, और प्रत्येक "अलहम्दुलिल्लाह" (सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है) एक दान है, और प्रत्येक (ला इलाहा इल्लाहू) (अल्लाह को छोड़ कर कोई पूजनीय नहीं है) एक दान है।" इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

* इमाम नववी ने कहा: इसका मतलब यह है कि एक दान करने का बदला और पुण्य मिले गा।

२) यदि एक मुसलमान सोने से पहले लगातार इन दुआओं को पढ़ता है तो उसके लिए स्वर्ग में सौ (१००) पेड़ लगा दिए जाते हैं।जैसा कि इब्ने-माजा के द्वारा उल्लेखित शुभ हदीस में आया है।

३– अल्लाह सर्वशक्तिमान अपने दास को उस रात सुरक्षित रखता है और शैतान को उस से दूर रखता है , और बुराइयों और कठनाईयों से उसे बचाता है।

४– इसके द्वारा एक व्यक्ति अल्लाह की याद , उसकी आज्ञा, उसपर भरोसा, विश्वास और उसकी एकता पर ईमान के साथ अपने दिन को समाप्त करता है।

प्रत्येक कामों के समय इरादा को शुद्ध रखना चाहिए

ज्ञात हो!- अल्लाह आपको अच्छा रखे-कि सारे वैध काम जो आप करते हैं जैसे: सोना, खाना और रोज़ी कमाने का प्रयास इत्यादि सब के सब को इबादत, फर्माबरदारी और पुण्य का काम बना सकते हैं, जिनके बदले में आपको हज़ारों पुण्य प्राप्त होंगे, बस शर्त यह है कि एक व्यक्ति अपने दिल में इन कामों को करते समय अल्लाह की इबादत का इरादा रखे, क्योंकि हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा: «कामों की निर्भरता तो इरादों पर है, और आदमी के लिए तो वही है जिसकी वह निय्यत रखता है।» इसे इमाम बुखारी और मुस्लिम ने उल्लेख किया।

* उदाहरण: यदि एक मुसलमान व्यक्ति इस इरादे से जल्दी सोता है कि रात में नमाज़ केलिए अथवा फ़जर की नमाज़ के लिए जाग जाए तो उसका सोना भी इबादत हो जाता है।इसी तरह अन्य वैध कामों को भी समझ लीजिए।

एक ही समय में एक से अधिक इबादत कर लेना

एक ही समय में कई इबादतों को प्राप्त करने का गुर तो वही जानते हैं जो अपने समय को बचा बचा कर चलते हैं।
हमारी जीवन में इसका प्रयोग कई तरह से हो सकता है:
१- यदि एक मुसलमान पैदल मस्जिद को जा रहा हो या अपनी गाड़ी से जा रहा हो , तो यह जाना भी एक अलग इबादत है और इस पर भी एक मुसलमान को पुण्य मिलता है , लेकिन इसी समय को अधिक से अधिक अल्लाह को याद करने और पवित्र कुरान को पढ़ने में भी लगाया जा सकता है, और इस तरह एक व्यक्ति एक ही समय में कई इबादत कर सकता है।
२ - यदि एक मुसलमान किसी शादी के एक ऐसे भोज में जाता है जो बुराइयों से बिलकुल मुक्त और पवित्र हो तो उसका इस भोज में जाना भी एक इबादत है , लेकिन वह व्यक्ति भोज में अपनी उपस्थितिको कई इबादतों में लगा सकता है, जैसे अधिक से अधिक अल्लाह को याद करे, और लोगों को अल्लाह की ओर आमंत्रणकरे।

हर हर घड़ी अल्लाह को याद करना

१) वास्तव में अल्लाह की याद, अल्लाह की इबादत और उसकी बंदगी की बुनयाद है, क्योंकि उसे सदा याद रखना एक दास के अपने सर्जनहार से हर समय और हर घड़ी लगाव की निशानी है: हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- के द्वारा उल्लेख है कि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो- अपनी हर घड़ी में अल्लाह को याद किया करते थे।इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है।

* याद रहे कि अल्लाह से जुड़े रहना वास्तव में जीवन है, और उसकी शरण में आना ही मुक्त है, उसके नज़दीक होना सफलता और प्रसन्नता है , और उस से दूर होना गुमराही और क्षति है।

२– अल्लाह को याद करना सच्चे मोमिनों (विश्वासियों) और पाखण्डीयों के बीच विशिष्ट चिह्नहै, पाखण्डीयों की पहचान ही यही है कि वे अल्लाह को याद नहीं करते हैं मगर बिलकुल नामको।

३- शैतान मनुष्य पर उसी समय चढ़ बैठता है जब वह अल्लाह की याद को त्याग देता है।वास्तव में अल्लाह की याद वह मज़बूत गढ़ है जो मनुष्य को शैतान के जालों से बचाता है।

* शैतान तो चाहता ही यही है कि व्यक्ति को अल्लाह की याद से बहका दे।

४– अल्लाह की याद ही प्रसन्नता का रास्ता है।अल्लाह सर्वशक्तिमान का फ़रमान है:

« الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ» (الرعد: ٢٨)

«ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को अल्लाह के स्मरण से आराम और चैन मिलता है।» (अर-रअद: २८)

५– अल्लाह को सदा याद करना आवश्यक है, क्योंकि स्वर्ग के लोगों को किसी भी बात पर कोई अफसोस और पछतावा नहीं होगा।यदि पछतावा होगा तो केवल उस घड़ी पर जो दुनिया में बिना अल्लाह सर्वशक्तिमान को याद किए गुज़र गई।(अल्लाह को याद करने का मतलब ही यही है कि अल्लाह से लगातार लगाव बना रहे।

इमाम नववी का कहना है: विद्वानों का इस बात पर समर्थन है कि अल्लाह को हर तरह याद किया जा सकता है, दिल से , जीभ से , बिना वुज़ू किए, इसी तरह बिना नहाई और माहवारी वाली स्त्री और बच्चा जन्म देने के बाद खून से पवित्र होने से पहले भी स्त्री अल्लाह को याद कर सकती है, उन स्तिथियों में भी अल्लाह

को याद करना वैध है, और वह «सुब्हानल्लाह» (पवित्रता है अल्लाह के लिए है) और «अल्लाहु अकबर»(अल्लाह बहुत बड़ा है) और «अलहम्दुलिल्लाह» (सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है) और «ला इलाहा इल्लाहू» (अल्लाह को छोड़ कर कोई पूजनीय नहीं है)पढ़ सकती है, इसी तरह हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-पर दुरूद व सलाम पढ़ना भी वैध है, और दुआ करना भी मना नहीं है, हाँ पवित्र कुरान को नहीं पढ़ेगी।

६ जो भी अपने पालनहार को याद करता है तो उसका पालनहार भी उसे याद करता है।अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

« فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ» (البقرة:١٥٢)

अत:और तुम मुझे याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूंगा।और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञतान दिखलाना। [अल-बक़रा: १५२]

ज्ञात हो कि जब एक व्यक्ति को यह पता चलता है कि किसी राजा ने उसे अपने दरबार में याद किया तो वह बहुत प्रसन्न हो जाता है, तो फिर उस समय क्या स्तिथि होनी चाहिए यदि यह पता चल गया है कि सारे राजाओं का राजा उसे याद करता है।और फिर उन राजाओं के दरबार से भी बेहतर और सब से ऊँचे दरबार में उसे याद किया जा रहा है।

७– इस याद का हरगिज़ यह मतलब नहीं है कि आदमी किसी विशेष शब्द की रट लगाते बैठे, और दिल अल्लाह के सम्मान और उसकी फरमाबरदारी से दूर भटकता फिरे, इसलिए ज़ुबान से याद करने के साथ साथ उन शब्दों के अर्थ और मतलब में सोच-वीचार करे बल्कि उनके अर्थों में डूबा रहना भी ज़रूरी है।अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

« وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ" (الأعراف:٢٠٥)

«अपने रब को अपने मन में प्रात: और संध्या के समयों में विनम्रतापूर्वक, डरते हुए और हल्की आवाज़ के साथ याद किया करो।और उन लोगों में से न हो जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।(अल-अअराफ़: २०५)

• इसलिए अल्लाह को याद करने वाले व्यक्ति केलिए यह ज़रूरी है कि उन शब्दों को अच्छी तरह समझे और मन में बिठाए और जिनको वह ज़ुबान से कह रहा है उन्हें अपने दिल में भी उपस्थित रखे।ताकि ज़ुबान की याद के साथ साथ दिल की याद भी इकठ्ठी हो जाए, और मनुष्य बाहर और अंदर दोनों के द्वारा अल्लाह से जुड़ा रहे।

अल्लाह के कृपादानों में सोच वीचार करना

अल्लाह के कृपादानों के बारे में सोचो , और अल्लाह में मत सोचो ।इसे तबरानी ने "अव्सत" में और बैहक़ी ने "शुअब" में उल्लेख किया है और अलबानी ने इसे विश्वशनीय बताया।

और जो चीजें एक मुसलमान व्यक्ति के साथ दिन-रात में कई बार पेश आती हैं उन्हें में अल्लाह के कृपादानों का एहसास करना भी शामिल है ।दिन-रात में कितने ऐसे अवसर आते हैं और कितनी ऐसी घड़ियाँ गुज़रती हैं जिन्हें मनुष्य देखता है या सुनता है, और बहुत सारे ऐसे अवसर आते रहते हैं जो अल्लाह के कृपादानों में सोच-वीचार और शुक्रिया अदा करने की ओर आमंत्रित करते हैं।

१– तो क्या मस्जिद को जाते समय आपने कभी यह महसुस किया कि आप पर अल्लाह की कितनी बड़ी मेहरबानी है कि आप मसजिद को जा रहे हैं जबकि आपके आसपास ही बहुत सारे ऐसे लोग रहते होंगे जो इस कृपा से वंचित हैं, विशेष रूप से सुबह की नमाज़ के लिए जाते समय आपको इस कृपा का भरपूर एहसास होना चाहिए जब आप मुसलमानों के घरों में देखेंगे कि वे गहरी नींद में मुरदों की तरह पड़े हैं।

२- क्या आपने अल्लाह की मेहरबानी को अपने आप पर महसूस किया? विशेष रूप से जब आप किसी दुर्घटना को देखते हैं, किसी के साथ गाड़ी की दुर्घटना हो गई तो कोई शैतान की आवाज़(यानी गानों) को ज़ोर ज़ोर से लगाए हुए है आदि।

३– क्या आपने उस समय अल्लाह की दया को महसूस किया जब आप सुनते हैं या पढ़ते हैं कि दुनिया में फुलाना देश में भुकमरी टूट पड़ी है , या बाढ़ में लोग मर रहे हैं या फुलानी जगह पर बिमारियाँ फैली हुई हैं या और कोई दुर्घटना आई हुई है, या फलाना देश के लोग भूकंप से दोचार हैं या युद्धों में पिस रहे हैं या बेघर हो रहे हैं?

* मैं कहना चाहूंगा कि एक सफल व्यक्ति वही है जिसके दिल और जिसकी भावनाओं और जिसके एहसास से अल्लाह की मेहरबानी कभी ओझल नहीं होती है, और वह हर स्थिति में और हर मोड़ पर सदा अल्लाह का शुक्रिया और उसकी प्रशंसा में लगा रहता है ।और उस कृपा का शुक्र अदा करता है जो उसे अल्लाह की ओर से प्राप्त है जैसे: धर्म, धन-दौलत की बहतायत, स्वास्थ्य, सुरक्षा इत्यादि की नेमत।

शुभ हदीस में आया है, हज़रत पैगंबर -उन पर इश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने कहा: जो किसी मुसीबतज़दा को देखे तो वह यह दुआ पढ़े :

"الحمد الله الذي عافاني مما ابتلاك به وفضلني على كثيرٍ ممن خلق تفضيلاً"

"अल-हम्दुलिल्लाहिल-लज़ी आफानी मिम्मब-तलाका बिही, व फ़ज़्ज़लनीअला कसिरिन मिम्मन खलक़ा ताफ्ज़ीला" (अल्लाह के लिए शुक्रिया है जिसने मुझे उस पीड़ा से मुक्त रखा जिस से उसे पीड़ित किया और जिसने मुझे ऐसे बहुत सारों पर प्राथमिकता दिया जिसे उसने बनाया है ।यदि यह पढ़ता है तो उस पीड़ा से कभी पीड़ित नहीं होगा ।इमाम तिरमिज़ी ने इसे विश्वशनीय बताया ।

हर महीने में कुरान पढ़ना

हज़रत पैगंबर-उनपर इश्वर की कृपा और सलाम हो- ने कहा: “ हर महीनेमें कुरान पढ़ा करो “ इसे अबू –दाऊद ने उल्लेख किया। हर महीने में पूरा कुरान पढ़ने का तारीक़ा:
इस का तारीक़ायह है कि आप प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ से लघभग १० (दस) मिनट पहले मस्जिद में पहुंचने की कोशिश करें, ताकि आप नमाज़ शुरू होने से पहले दो पन्ना पढ़ सकें, यानी दो पन्ने प्रत्येक नमाज़ से पहले, इस तरह आप प्रतिदिन दस पन्ने पढ़ लेंगे।मतलब एक पारा।इस तरह आप प्रत्येक महीने में एक बार पूरा कुरान आसानी से पढ़ लेंगे।

समाप्ति

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की दैनिक सुन्नतों में से इतना को मैं यहाँ जमा कर सका, और अल्लाह से प्रार्थना है कि हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की सुन्नतों पर हमें जिलाए और उसी पर मौत दे। हामारी आखरी बात यही है कि सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए ही है जो सारे संसारों का पालनहार है।

खालिद अल-हुसैनान।